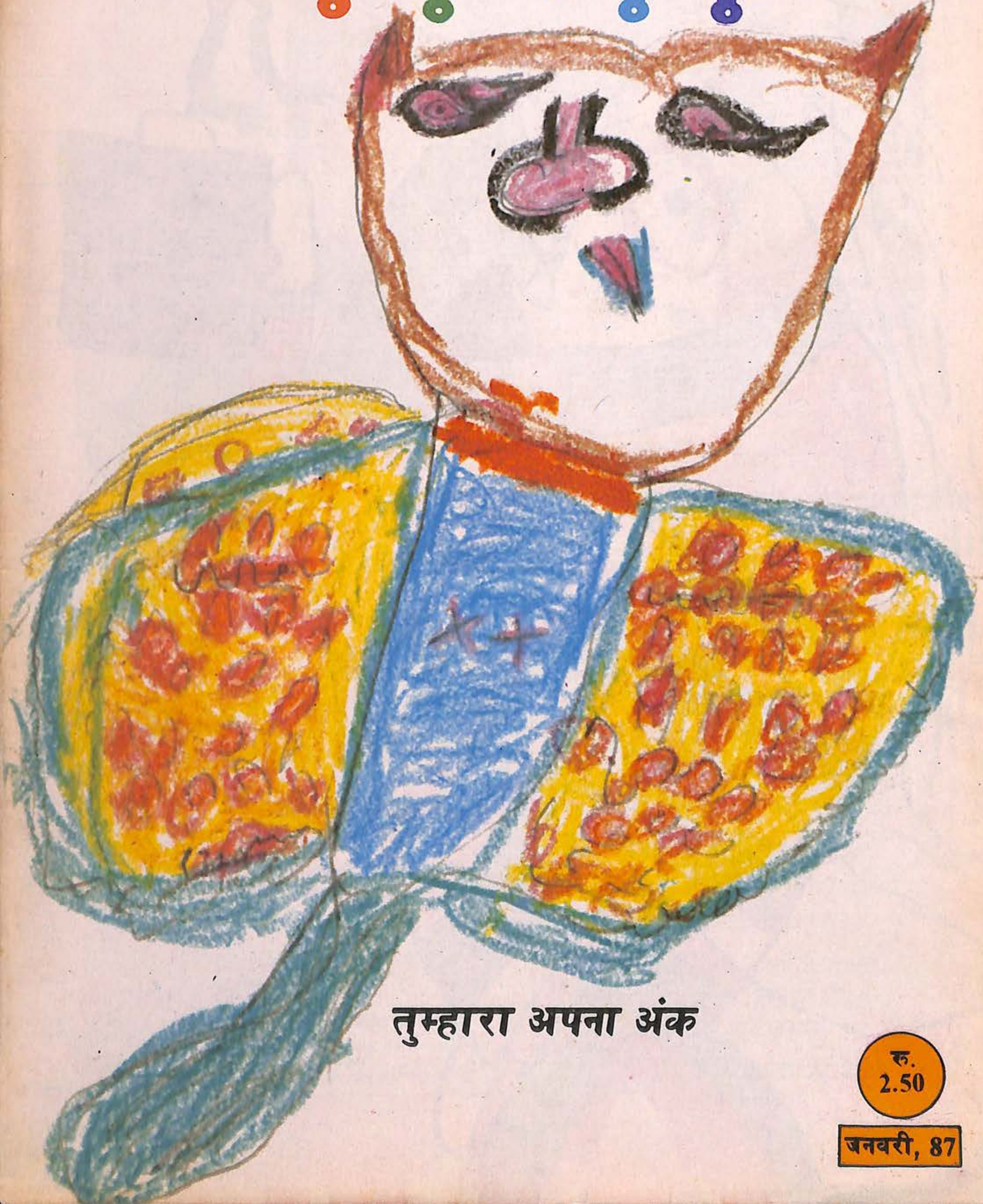
बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक



तुम्हारा अपना अंक

रु. 2.50

जनवरी, 87



चित्रः-जुल्फकार मंसूरी, छठवीं
खापरखेड़ा, होशंगाबाद

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।



'गुरूजी' विष्णु चिंचालकर



प्रतियोगिता में आई रचनाओं का मूल्यांकन करने में व्यस्त संपादक जन

इस अंक में

प्रतियोगिता से चुनी रचनाएं तथा अन्य सामग्री...

आवरण: विप्लव शशि

चकमक का चंदा
छमाही: 15 रुपए
वार्षिक: 30 रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनी आर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता-
एकलव्य
ई-1/208, अरेरा कालोनी
भोपाल 462016 (म.प्र.)

शुभकामनाएं

खेतों की मेड़ों पर धूल-भरे पांव को,
कुहरे में लिपटे उस छोटे से गांव को,
नये साल की शुभकामनाएं।

जांते के गीतों को, बैलों की चाल को,
करघे को कोल्हू को, मछुए के जाल को,
नये साल की शुभकामनाएं।

इस पकती रोटी को, बच्चों के शोर को,
चौके की गुनगुन को, चूल्हे की भोर को,
नये साल की शुभकामनाएं।

□ सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
भाग 2 अंक 7 जनवरी, 1987
संपादक: विनोद रायना
संपादक मंडल: राजेश उत्साही, निशा व्यास हरगोविंद राय, गोपाल राठी
कला: जया विवेक
उत्पादन/वितरण: हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह
संपादकीय परामर्श: रेक्स

इस अंक के विशेष सहयोगी
शिवेंद्र, विष्णु चिंचालकर, गुरु बचन सिंह, तेजी ग्रोवर, शशि मौर्य एवं नरेंद्र कुमार

तुम्हारा अपना अंक

यह अंक तुम्हारा अपना है। इसकी अधिकांश सामग्री तुम्हारी और तुम्हारे साथियों की बनाई हुई ही है। हमने अपनी तरफ से कुछ टिप्पणियां ही इसमें जोड़ी हैं।

यह सामग्री 'चकमक' प्रतियोगिता और पिपरिया के शहीद भगतसिंह पुस्तकालय एवं सास्कृतिक केन्द्र की प्रतियोगिता में आई सामग्री से चुनी गई है। यह सामग्री चुनी कैसे गई और अंक कैसे बना? आओ, यह कहानी तुम्हें बताते हैं।

यह तो तुम्हें मालूम ही है कि चकमक प्रतियोगिता में किन की रचनाएं अच्छी हैं, ऐसा निर्णय हमको करना था। तुम यह जानने के लिए बेचैन होगे कि किन की रचनाएं चुनी गईं। भई, यह काम बहुत मुश्किल था, चाहे तुम्हें आसान लग रहा हो। तुम्हीं सोचो यह कैसे तय करें कि कौन सा चित्र या रचना अच्छी है और कौन सा नहीं? बहुत मेहनत से बनाई रचना को यदि एक वाक्य में यह कहकर अलग कर दें कि अच्छी नहीं है तो तुम्हें कितना बुरा लगेगा या गुस्सा आएगा, यह सोचकर हम घबरा रहे थे। पर क्या करें, अच्छी रचना और कम अच्छी रचना में अंतर तो करना ही पड़ेगा। और हमने किया। अब तुम चाहे चकमक को कोसो या कुछ और करो। इस काम में हमने कुछ ऐसे साथियों की मदद ली जो तुम्हारे बीच ऐसा ही कुछ काम कर रहे हैं। हमने इन साथियों को लिखा-शशि, तेजी और नरेन्द्र, पिपरिया के शहीद भगतसिंह पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक केन्द्र से, गुरुबचन सिंह,टीकमगढ़ के बाल साहित्य केन्द्र से और जाने-माने 'गुरुजी' विष्णु चिंचालकर, इंदौर से। तुम्हारे कुछ साथियों को भी हमने इस काम में शामिल करना चाहा। पर भोपाल के शिवेंद्र पांडिया (कक्षा नवमीं) ही इसमें शामिल हो सके। ये सारे लोग चार-पांच दिन के लिए भोपाल में आ जुटे।

बस फिर क्या था, पांच दिन तक खूब बहस, झगड़ा और सवाल-जवाब का दौर चला। कोई कहता कि यह चित्र अच्छा है और कोई कहता नहीं, यह तो बनाने वाले ने खुद नहीं बनाया। या कोई कहता कि यह तो किसी किताब या कैलेंडर की नकल है। इसी तरह की सिर फुटौअल कविता और कहानियों को लेकर भी हुई। फिर लगा कि ऐसे बात बनेगी नहीं। हम को कुछ उद्देश्य स्पष्ट करने चाहिए और फिर तय करना चाहिए कि कौन सी रचनाएं इन उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं। शुरुआत गुरुजी ने की।

गुरुजी ने बोलना शुरू किया और बस सब सुनते ही रह गए। उनकी सफेद दाढ़ी के बीच मुंह से निकलते शब्द कितने मीठे लगते हैं। जब गुरुजी बोलते हैं तो आंखें उनके चेहरे से हटती ही नहीं हैं। इतना अच्छा लगता है उनके शब्दों के साथ उनके चेहरे के भावों को देखना। और इसी से हमें एक सूत्र मिला। उनका बोलना तो भाषा है और उनके चेहरे के भाव चित्र। दोनों मिलकर कितने सहज, और मजेदार तरीके से बात स्पष्ट करते हैं। हमें लगा अच्छे चित्र और कहानी या कविता में भी तो यही बात होनी चाहिए। एक सहज स्वाभाविक अपनापन। इसलिए अगर किसी के चित्र में व्यवसायिक चित्रकला जैसे कैलेंडर, सीनरी इत्यादि का बहुत अधिक अंश हो तो वह उसका अपना तो है नहीं। मतलब बनाया तो उसी ने है मगर उस पर उन चित्रों का ज्यादा प्रभाव है जो उसने घरों, होटलों, पान की दुकान या ऐसी ही किसी और जगह लगे देखे हैं। असली चित्र तो वही है जिसे मन से बनाया गया हो।

अब एक दूसरी बात करें। अगर किसी ने ऐसा चित्र बनाया है। जिसमें मछली रंग-बिरंगी और बहुत बड़ी-सी हो और उसको पकड़ता मछुआरा मछली की अपेक्षा बहुत छोटा और रंगहीन। हमें कैसा लगेगा? यह चित्र तो हमारे अनुभव के बिल्कुल विपरीत है। आदमी तो आम मछली से बहुत बड़ा होता है। तो क्या करें।

तो भई, तय यह हुआ कि चित्र बनाना कोई फोटो खींचना तो है नहीं। कभी-कभी कहानियों में जैसे हम काल्पनिक चीजों का सहारा लेकर अपनी बात और अच्छी तरह से कहते हैं वैसी ही काल्पनिक उड़ान चित्रों में भी तो हो सकती है। बादलों को देखते-देखते कितने ही हाथी-घोड़े, खरगोश, भालू, दाढ़ी वाले बाबाजी हमारे मन में घूमने लगते हैं। ऐसी ही होती है कल्पना, जो बादलों में चित्र ढूंढती है और इसी तरह आसपास की चीजों में भी अपने मन के चित्र ढूंढ निकालती है।

जब हमने प्रतियोगिता में आई कहानियों और कविताओं को पढ़ना शुरू किया तो उनमें भी तुम्हारा अपना लिखा हुआ बहुत कम है आधे से ज्यादा रचनाएं ऐसी थीं जो किसी पुस्तक, पत्रिका या अखबार में छपी थीं, वही से उतारकर भेज दीं। एक-दो लोगों ने तो 'चकमक' के पुराने अंकों से ही नकल करके भेज दीं।

यह सब देखकर हम परेशान हो गए। आखिर ऐसा क्यों हुआ? कहानी-कविता के विषय भी नहीं दिए गए थे। जो जैसा चाहता, जिस विषय पर चाहता लिखकर भेज सकता था। कहीं कोई बंधन नहीं था। फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ? अगर विषय पहले से तय होते तो क्या तुम अपने मन से सोच-समझकर रचनाएं लिखते या चित्र बनाते? पिपरिया के साथियों का ऐसा ही अनुभव था वहां जो प्रतियोगिताएं हुई उनमें कहानी-कविता और चित्रों के लिए पहले से ही कुछ निश्चित विषय दिए गए थे। इन पर जो रचनाएं आईं वे संतोषजनक थीं। उनमें से कुछ तुम इसी अंक में पढ़ सकते हो।

कहानियों और कविताओं में तुम्हारा कम और बड़ों का ज्यादा असर दिखा। जो शब्द और भाषा तुम्हारी कहानियों में आई है,. क्या वह सचमुच तुम्हारी अपनी है? हमें लगता है यह तुम्हारी अपनी भाषा नहीं है। बड़ों ने तुम्हारे लिए लिखा है या तुमने कहीं से उतार लिया है। चकमक के इसी अंक में तुम अपने साथियों की कुछ कहानियां देखोगे जैसे "बिल्ली और चूहा नाम के दो मित्र थे।" यह तुम्हारा अपना ढंग है इसमें बड़ों का असर नहीं दिखता है। ऐसी बहुत कम कहानियां प्रतियोगिता में आई हैं।

चित्र क्यों अच्छे लगे ?

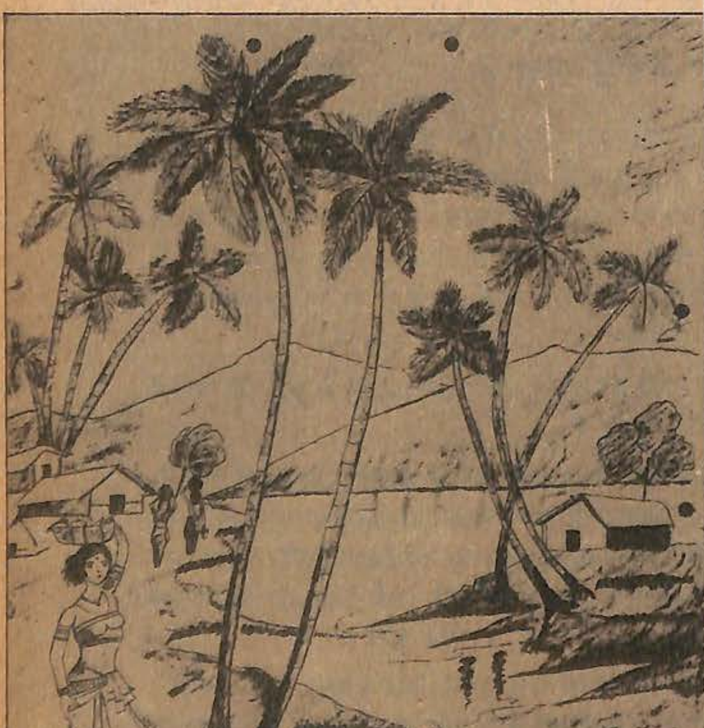
कोई भी काम हो, मजा तब ही आता है जब उसे खेल-खेल में कर डालें। चाहे फिर वह पढ़ाई हो या घर का कोई भी काम। हम खेल-खेल में ही ढेर सारी चीजें सीखते हैं। अब चित्र कला की बात लें, हमें लगता है चित्र बनाना भी एक खेल है। खासकर जब तुमसे चित्र बनाने को कहा जाता है तो तुम यूं ही पेंसिल या रंग से आड़ी-तिरछी लकीरें खींचने लगते हो और चित्र बनना शुरु हो जाता है। इनमें धीरे-धीरे वे चीजें भी जुड़ती जाती हैं जिन्हें तुम रोज देखते हो या कुछ अड़म-बड़म सोचते हो वह भी आ जाता है। ऐसे चित्र ही मजेदार और अच्छे बन जाते हैं।

इस प्रतियोगिता में ऐसे कई चित्र आए जो सभी को बहुत अच्छे लगे। इनमें से कुछ इस अंक में छपे हैं। उन्हें देखो और सोचो कि ये क्यों अच्छे लगते हैं।

उदाहरण के लिये मुखपृष्ठ पर छपा चित्र देखो। वैसे यह सचमुच के उल्लू जैसा तो नहीं है, मगर बनाने वाले ने मोटे तौर पर उसे उल्लू का आकार देते हुए उसकी आंखों में काजल भी लगा दिया। भई, ऐसा तो तुम ही कर सकते हो। इसी तरह पिछले आवरण का चित्र देखो। उड़ती हुई पतंगों के आसपास कितना कुछ और भी है। अब पतंग उड़ाते समय मोर न भी देखा हो, लेकिन मन से जोड़ दिया गया है। किसी भी आकार के छोटे-बड़े होने की परवाह नहीं है।

एक और चित्र में कुम्हार काम कर रहा है। किसी भी घटना का चित्र इतना ही ताजा और रोचक हो सकता है। सायकिल सुधारना, कूड़ा फेंकना कैसी भी कोई भी घटना चित्र का विषय हो







सकती है। जरुरी तो नहीं कि चित्र बढ़िया बनाने के लिये सूरज, नदी, पहाड़ ही होना चाहिए। या मेले का दृश्य और पतंग उड़ाने से ही चित्र मजेदार हो सकते हैं।

देवास से दूसरी कक्षा के एक साथी ने चित्र बनाकर भेजा है। जैसे-जैसे मन में टेढ़े-तिरछे आदमी, गधे, घोड़े, सांप, पेड़ आते गए, वैसे-वैसे कागज पर बनते गए। खूब मस्ती में बनाया गया चित्र है। तुम ही बताओ नकल करने में ऐसी मस्ती हो सकती है।

इसी तरह के कुछ और चित्र हैं 'चकमक' में। इनके बारे में तुम क्या सोचते हो?

ये चित्र कैसे हैं?

अब यहां छपे तीन चित्रों को ध्यान से देखो। यह चित्र भी प्रतियोगिता में आए हैं। कुछ याद आता है? अक्सर ऐसे चित्र कैलेंडर या पत्रिकाओं में दिखते हैं। शादी-ब्याह के निमंत्रण-पत्र या ऐसे ही अवसरों में उपहार में दिए जाने वाले चित्र भी ऐसे ही होते हैं, जिन्हें 'सीनरी' कहते हैं। इन चित्रों में अपने मन से कुछ करने की गुंजाइश नहीं है। हम ऐसे चित्रों को रोज ही यहां-वहां देखते रहते हैं। इसलिए जब भी चित्र बनाने को कहा जाता है, हम ऐसे ही चित्रों की नकल करते हैं।

तुम अपने ऐसे साथियों को जरुर जानते होगे जो पाठ को रट लेते हैं और फिर किताब पर अंगुली रख-रखकर जोर से पढ़ते हैं। मगर अंगुली किसी और लाइन पर होती है और बोलते हैं वह किसी और लाइन में। ऐसा ही कुछ इन चित्रों के साथ भी लगता है। ऐसे चित्र जब बनाए जाते हैं तो उसमें रटी-रटाई झोपड़ी, खजूर के पेड़ या तिकोने पहाड़ आदि आ जाते हैं। तुम सोचोगे इसमें क्या गड़बड़ी है।अगर सच मानो तो इसमें बहुत बड़ी गड़बड़ी है। ऐसा करने से हम इन देखे हुये चित्रों के बंधे-बंधाए ढांचे में फंस जाते हैं। ऐसे में हमारे पास करने को कुछ नहीं रह जाता। फिर यह हमारा कैसे हुआ?

तुम यह सुनकर परेशान तो नहीं हो गए? हम भी ऐसे ही परेशान हुए, फिर हमने इस पर गुरुजी से चर्चा की। गुरुजी ने बड़ी मजेदार बात बताई कि बच्चे इन नकली चित्रों की नकल करने के बजाए क्यों न प्रकृति की ही नकल करें।

तुम अपने आसपास के संसार को जरा ध्यान से देखो, उसमें ढेर सारी चीजें हैं। घर, सड़क, बाजार, नदी, नाला आदि जिन्हें तुम रोजाना देखते हो। जब चित्र बनाने बैठो तो क्यों न इनके ही चित्र बनाओ।

मान लो कि तुम्हें कोई चित्र बनाना है तब यह जरुरी तो नहीं है कि कोई निश्चित विषय तुम्हारे सामने हो। तुम कुछ बनाना शुरु करते हो तो दो-चार लकीरें खींचने के बाद लगता है कि यह तो घर बन रहा है। घर तो तुमने बहुत देखे होंगे, और वे सब एक से नहीं होंगे। दूसरी बात घर में क्या सामान और काम होते हैं ये भी तुम्हें मालूम है। अब चित्र बनाते समय इनमें से कई चीजें तुम्हारे चित्र में आ जाएंगी। यह बिलकुल वैसा ही है जैसे तुम मेले से लौटकर अपने दोस्तों को मेले के बारे में बताते हो। अब बताने के पहले पूरा-पूरा सोचकर या रटकर तो नहीं रख लेते हो कि पहले यह बताओगे, फिर यह। जो-जो तुम्हारे दिमाग में आता है तुम बताते जाते हो। धीरे-धीरे मेले में देखे मदारी के खेल, झूला, चकरी, मिठाई, दुकानें, रोशनी, लोगों की चहल-पहल आदि के बारे में बताते हो। चित्र बनाते समय भी ऐसा ही होता है। अगर चित्र नकल किए हुए नहीं हैं तो वे तुम्हारे मेले के बारे में बताने के ढंग जैसे ही होंगे। चित्रों में आकार सब ठीक-ठाक बनें यह बिल्कुल जरुरी नहीं है। लेकिन यह तुम्हारा अपना चित्र होगा क्योंकि इसे तुमने सोच-सोचकर मन से बनाया है।

रंगो का मेला
पर मैं अकेला
उसी समय मैंने देखा एक चेला
उसका गुरु था बहुत भुखेला
हमेशा खाता रहता था केला
उसे देख चेला भी हो गया भुखेला
और खाने लगा करेला
तभी आ गया एक ठेला
और ले गया रंगो का मेला
तभी हो गया मैं अकेला
चेला, केला, करेला भुखेला
सबको ले गया वह गन्दा ठेला
और कर गया मुझे अकेला

हिन्द के सिपाही
हिन्द के सिपाहियों
रखो लाज हिन्द की
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा
कर दो एक हिन्द के
सीमा की करो रखवाली
देश में बनाओ दिवाली
हिन्द के सिपाहियों
रखो लाज हिन्द की

किसकी कविता? कैसी कविता?

ये चार कविताएं हम भेजने वालों के नाम के बिना छाप रहे हैं। ऐसा हमें करना पड़ रहा है। ठीक उसी कारण से जिससे हमने कुछ चित्रों को बिना नाम के छापा है।

जिस तरह कुछ चित्र कैलेंडरों और 'सीनरी' आदि से नकल किए हुए हैं, उसी तरह कविताएं भी इधर-उधर से जमा करके भेज दी गई लगती हैं। बापू के सपनों का भारत, भारत माता पर बलिहारी जाना, हिंद की सीमा की रखवाली करते हुये सिपाहियों की प्रशंसा में गीत लिखना, नादान बालक बनकर ईश्वर को रटी-रटाई प्रार्थनाएं भेंट करना-क्या यह सचमुच तुम्हारी दुनिया की बातें हैं?

यह तो तुम्हारी लिखी हुई कविताएं हैं ही नहीं। न इतनी घिसी-पिटी चीजों को तुक से तुक मिलाकर लिख डालने को कविता कहा जा सकता है। चाहे बच्चों ने लिखी हों या बड़ों ने।

तुकबंदी तुम जानते ही हो क्या होती है। चेला, केला, करेला, ठेला, मेला, हर पंक्ति के आखिर में जोड़ दिया तो हो गई तुकबंदी। कविता तो नहीं हुई।

अच्छा तुम ही बताओ, क्या तुम 'बापू के सपने का भारत' के बारे में सोचते हो? तुम्हें मालूम है 'संकीर्ण विचारों का अंधियारा क्या होता है?' तुम 'हिंद की लाज', जैसी किसी चीज से परिचित हो?' 'शस्त्रास्त्रों में होड़ कर रहे शांतिहीन मनुष्य' तुम्हें परेशान करते हैं? क्या रोज खेलते-कूदते, कामकाज, करते तुम्हें एक पल के लिए भी लगता है कि तुम राष्ट्र की धरोहर हो? अगर इस

विस्फोटक दुनिया

आज "डाइनामाइट" के ढेर पर बैठी है दुनिया,
"स्टार वार्स" से बडी युक्तियां ढूंढ रही है दुनिया |
शस्तास्त्रो में होड़ कर रहे हैं शांतिहीन मनुष्य,
"एफ-16", "मिग-20" का क्रय विक्रय कर रहा मनुष्य |

आशंका है लोगो का तीसरा विश्वयुद्ध होने का,
भय हो रहा है, पुनरावृत्ति हिरोशिमा नागाशाकी होने का |

कही "भोपाल गैस कांड", कहीं "चेरनोबिल कांड",
मौत के मुँह से झांक रहा है, संपूर्ण ब्रम्हाण्ड |

बापू, नेहरू, इंदिराजी की परंपरा निभा रहा भारत,
"दिल्ली घोषणापत्र", शांति करा रहा है भारत |

"बियोंड वार" से पुरस्कृत है श्री राजीव गाँधी,
चल रही है, परंपरा यह, बापू, नेहरू गाँधी की |

॥ देश नया बनाना है ॥

देश नया बनाना है।
संकीर्ण विचारों के अंधियारे में,
नई रोशनी लाना है।
प्रबल वायु की झोकों से,
देश प्रेम पहुंचाना है।
देश नया बनाना है॥
अगिनत बाधाओं से लड़कर,
जलती चट्टानों में चढ़कर,
गीत खुशी के गाना है,
देश नया बनाना है।
रोक सकेगी क्या ये दीवारें,
लोभ का खंजर झूठ की तलवारें
इस त्यागी वीरान भूमि पर
जल की धार बहाना है।
देश नया बनाना है।
बापू जी के सपनों को,
चलते चलते अपनाना है।
वीर शिवा की तलवारों में
दाग नहीं लगाना है।
देश नया बनाना है॥

सबका जवाब 'नहीं' है तो चकमक प्रतियोगिता के लिए ऐसी कविताएं कैसे हमारे पास पहुंची?

इसी सिलसिले में तुम्हें एक मजेदार बात बताएं। एक बाल सभा में छटवीं कक्षा के एक बच्चे ने एक कविता हमें लिखकर दी। जिसमें एक पंक्ति थी 'बच्चे हैं धरोहर राष्ट्र की'। तो हमने उससे बड़े प्यार से पूछा, कि सच बताओ तुम्हें लगता है कि तुम राष्ट्र की धरोहर हो। उसने कुछ देर सोचकर मुस्कराते हुए पूछा, 'धरोहर का मतलब क्या होता है?'

ऐसी बातें जो तुम्हें कभी खुश करती हैं, कभी उदास। इनके बारे में लिखोगे तो कभी खुद समझ जाओगे तुकबंदी कविता नहीं होती। न ही घिसे-पिटे विचारों को पंक्तियां तोड़-तोड़कर लिखने को कविता कहा जा सकता है। तुम्हारे पास नो चीजों को देखने का ताजा और शरारती ढंग है प्रतियोगिता के लिए भेजी गई एक कविता में उसकी झलक नहीं मिली।

अपनी कविताओं के माध्यम से हमें नहीं बताओगे कि तुम्हारे मन में क्या-क्या घूमा करता है?

एक अंतिम बात और। ऊपर लिखी बातों से यह अर्थ मत लगा लेना कि देश-प्रेम आदि विषयों पर कविता लिखना गलत बात है। विषय कोई भी हो, घिसी-पिटी तुकबंदी और घिसे-पिटे ढंग से बचना है। चकमक के अगले अंकों में हम ऐसी कविताएं छापने की कोशिश करेंगे जो ऐसे विषयों पर बच्चों ने ही लिखी हैं और जिन्हें हम केवल तुकबंदी नहीं कह सकते।

प्रतियोगिता में लगभग एक हजार रचनाएं आईं। जिनमें चित्रों की संख्या अधिक थी। सबसे कम निबंध थे। कविता और निबंधों में कोई रचना इतनी अच्छी नहीं लगी कि उसे प्रकाशित किया जा सके। अच्छे चित्र तथा कहानियां इस अंक में प्रकाशित कर रहे हैं।

अच्छे चित्र

इकबाल, आठवीं, मानकुंड, देवास
वंदना शर्मा, चौथी, राधागंज, देवास
रामसींग, दूसरी, सादीपुरा, देवास
जयराज सिंह, राधागंज, देवास
संजीव चावड़ा, नवमीं, कन्नौद, देवास
नम्रता पाण्डेय, छटवीं, छतरपुर
जगदीश पाटीदार, नवमीं, अरलावदा, देवास
राकेश मालवीय, राधागंज, देवास
जीवनपुरी गोस्वामी, टिगारिया छोटा, देवास
आसुतोष संत, सातवीं, राधागंज, देवास
साजिद, आदर्श नगर, देवास
विप्लव शशि, दूसरी पिपरिया होशंगाबाद

अच्छी कहानियां

प्रफुल्ल परसाई, दस वर्ष, सोहागपुर, होशंगाबाद
ओमप्रकाश पाटीदार, आठवीं, बेहरिया साहू, देवास
सागरमल विश्वकर्मा, चांसिया, देवास
केशरीमल विश्वकर्मा, चांसिया, देवास
फूलसिंह ठाकुर, नवमीं, छिंदगढ़, बस्तर
अनिल श्रीवास्तव, सोलह वर्ष, बड़ेरा-बुजर्ग, ग्वालियर
मेहरबान, खरली, देवास
मोतीलाल यादव, लाटाबोड़, दुर्ग

अच्छे चित्रों में एक चित्र ऐसा भी है, जिस पर भेजने वाले का नाम नहीं है। चित्र है 'बुरूसली' का। अच्छे चित्रों में से दो अगले अंकों में कभी प्रकाशित किए जाएंगे।

इन सभी को एक साल तक चकमक मुफ्त भेजी जाएगी। साथ ही एक सुंदर पुस्तक उपहार में भेजी जा रही है।

प्रतियोगिता में जिन्होंने भाग लिया, उनके नाम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। हमने कोशिश की है कोई नाम छूटे नहीं। सबको चकमक का एक-एक अंक भी भेज रहे हैं।

शाहिदा पठान, दसवीं, सोमाल सिंह, आठवीं, शकुंतला, छठवीं, गायत्री, सातवीं, अर्जुन आर्य, रतन लाल माली, हरिभूषण जैन, दसवीं, जितेंद्र बागड़िया, चौथी, साधना, छठवीं, पांडुतालाब। दिलीप, सातवीं, अशोक, सातवीं, टिगारिया। राजेश चौहान, आठवीं, नगोरा। गुलाब सिंह, सातवीं, मुकेश चंद चौधरी, आठवीं, छोटा। शांतिलाल, सातवीं, महेंद्र, आठवीं, टिगारिया छोटा। अमित बावेल, सातवीं, कन्हैया निमावत, सातवीं, सीताराम रतोली, 17 वर्ष, **सभी हाटपीपल्या देवास।** दरयावसिंह, सातवीं, बद्रीलाल, छटवीं, तिलोकचंद्र, पांचवीं, मनोहर राठौर, सातवीं, रमेश, चौथी, गजराजसिंह चौहान, सातवीं, वहीद खां पठान, छठवीं, जितेंद्र चौहान, सातवीं, ओम प्रकाश जाट, पांचवीं, मांगीलाल, छठवीं, पवनलाल पाटीदार, छठवीं, याकुब खां पठान, पांचवीं, प्रहलाद, छठवीं, मोहन लाल मालवीय, पांचवीं, रामलाल, पांचवीं, प्रकाश, पांचवीं, मोहन लाल शर्मा, सातवीं, सागरमल पाटीदार, छटवीं, गौरी शंकर पाटीदार, सातवीं, दिनेश गामी, **सभी अरलावदा, देवास।** उमेश चौरसिया, आठवीं, नवीनपाल सिंह, छठवीं, सचिन शर्मा, सातवीं, मनीष गुप्ता, आठवीं, सोनकच्छ। लक्ष्मीनारायण शर्मा, छटवीं, रामविलास जाट, नवमीं, पुरुषोत्तम शर्मा, छठवीं, अविनाश वर्मा, बासिद, आठवीं, लखनलाल चौहान, सातवीं, छोटेराम, सातवीं, बलराम, छटवीं, बासिद अली, राधाकिशन. राठौर, शंकर लाल चौहान, **केदार चौहान,** आठवीं **सभी बाईजगवाड़ा, देवास।** बिसन, पांचवीं, रमेश सोमरा, तीसरी, केशर सिंह, **पांचवीं, सीगवार, पांचवीं,** श्यामपुरा। नरवरसिंह राजपूत, आठवीं, ओड़। रूपसिंह, पांचवीं, नूर खां, चौथी, सरदार नागर, पांचवीं, बरोठा। इंदरपटैल, आठवीं, मदन रामनाथ, आठवीं, सांवरिया कन्हैया, आठवीं, जगराम श्रीकृष्ण, आठवीं, संतोष शोभाराम, सातवीं, अमृतलाल रामदीन, सातवीं, संतोषदास, आठवीं, उमरिया। महेश कुमार आश्के, पूंजापुरा। के.एस. परमार, आठवीं, चांदखेड़ी। शीला

(शेष पृष्ठ 38 पर)



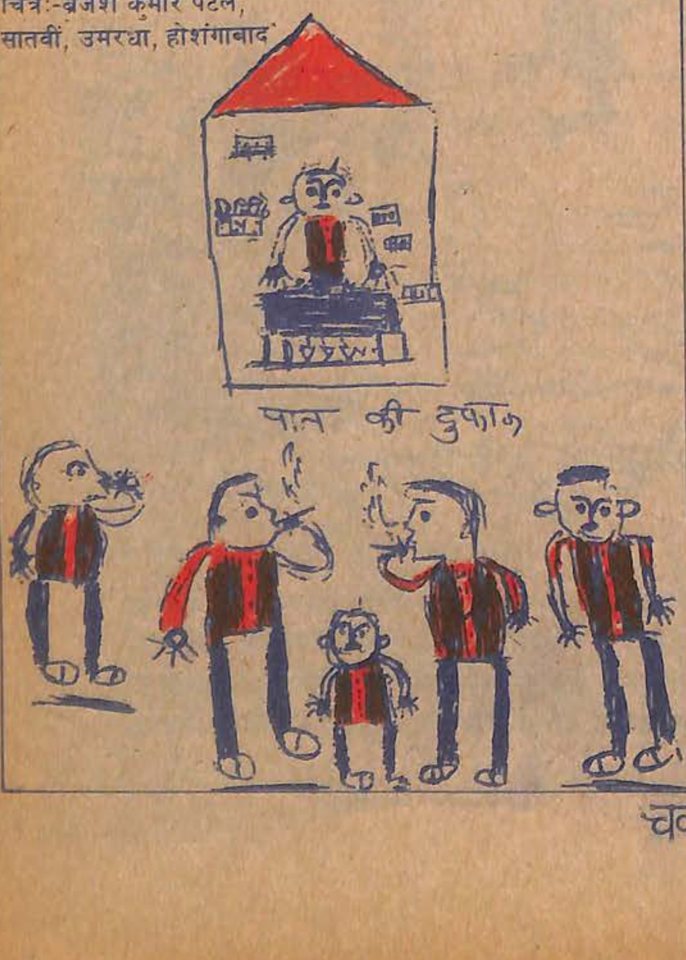
चित्र:-लक्ष्मी प्रसाद पटैल, छटवीं, चांदौन, होशंगाबाद

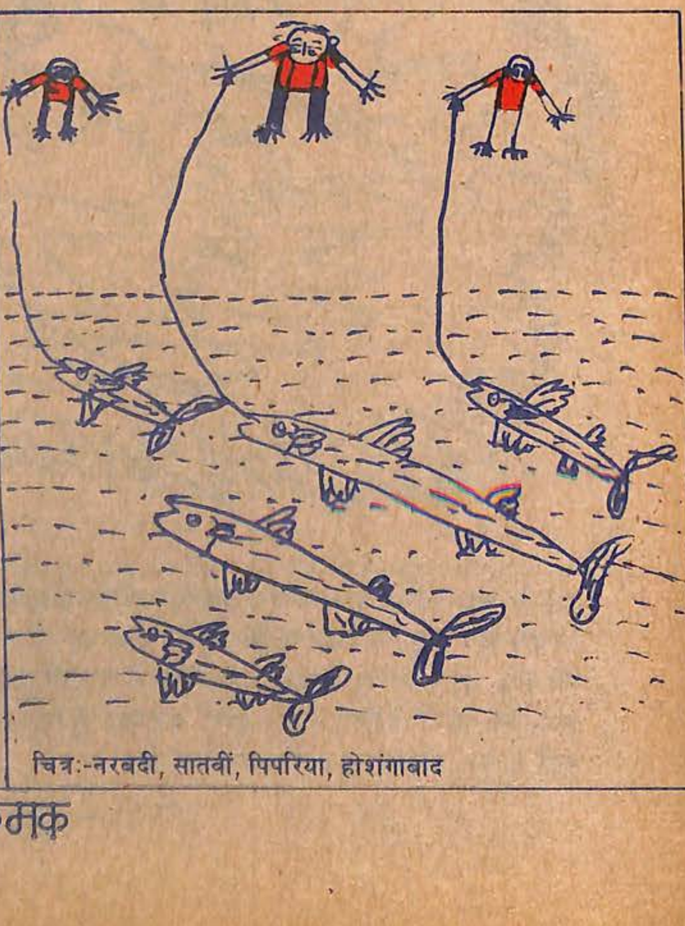
शहीद भगत सिंह पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक केंद्र, पिपरिया की प्रतियोगिता में चित्र तथा कहानी के लिए विषय दिए गए थे। चित्र के विषय थे- बया का घोंसला, मछली पकड़ता आदमी, पान की दुकान, बैलगाड़ी की दौड़, काम करता कुम्हार और स्कूल में गुरुजी या बहन जी। कहानी के विषय थे- ढोंगी साधु, बहन या बुआ को शादी के लिए देखने आए, बरसात में स्कूल की हालत, दोस्त से झगड़ा, स्कूल में साथी की पिटाई, नदी में पूर और राशन लेने की कहानी।



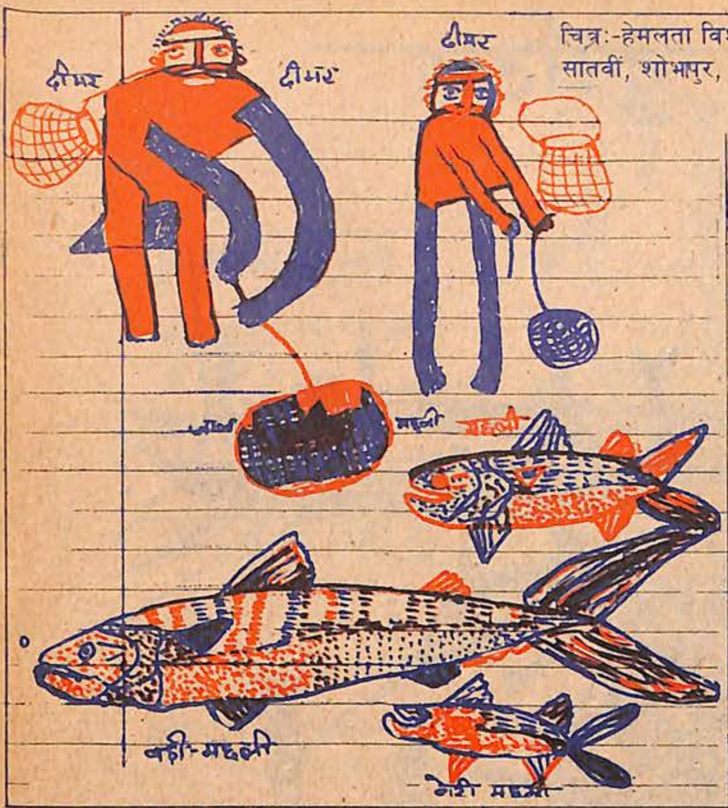
चित्र:-जयराजसींग, राधागंज देवास

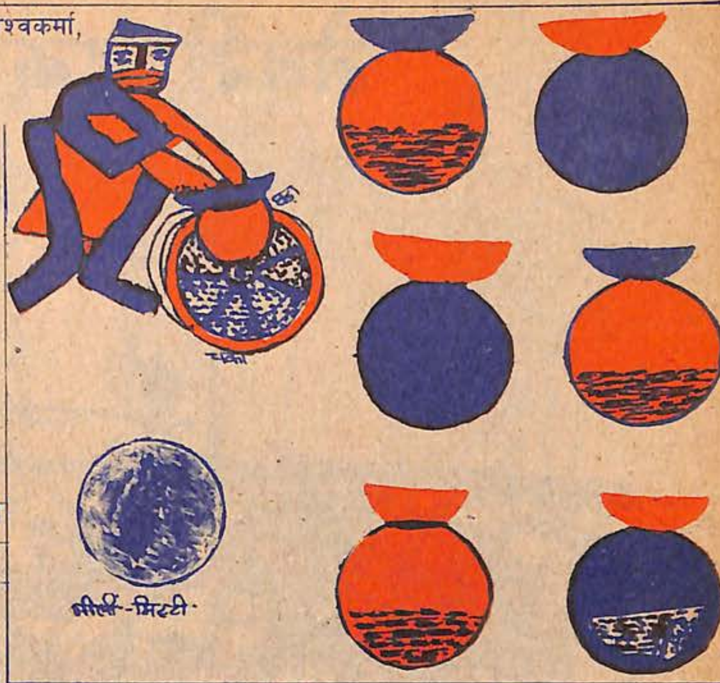
चित्र:-ब्रजेश कुमार पटैल,
सातवीं, उमरधा, होशंगाबाद



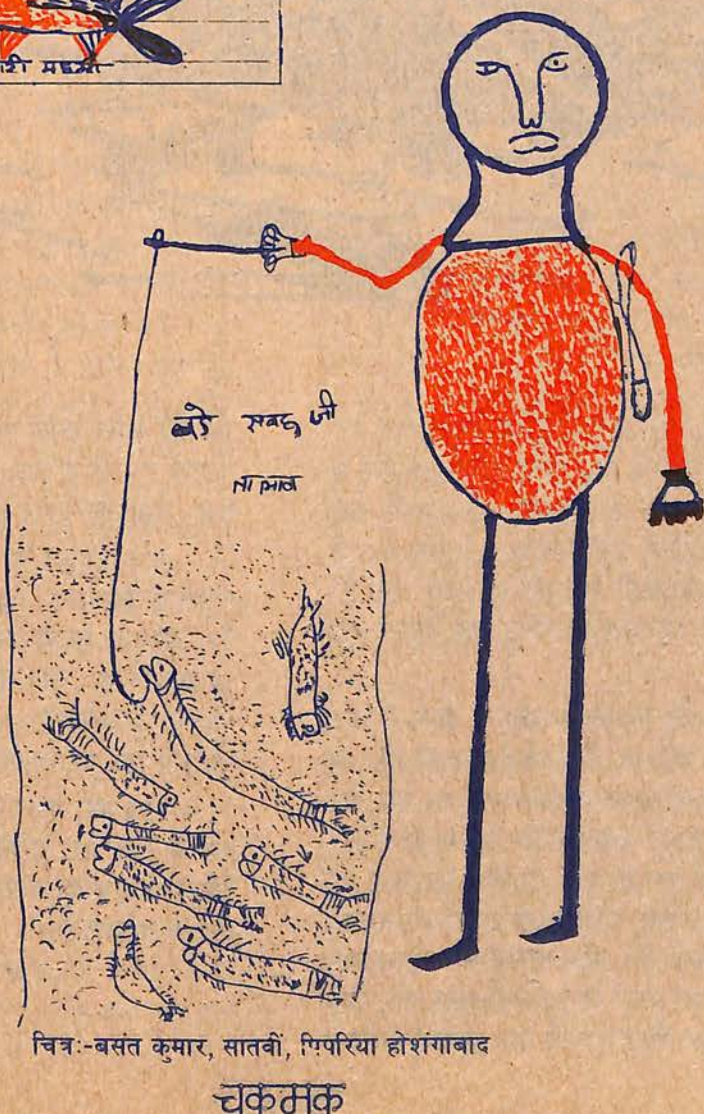


चित्र:-नरबदी, सातवीं, पिपरिया, होशंगाबाद



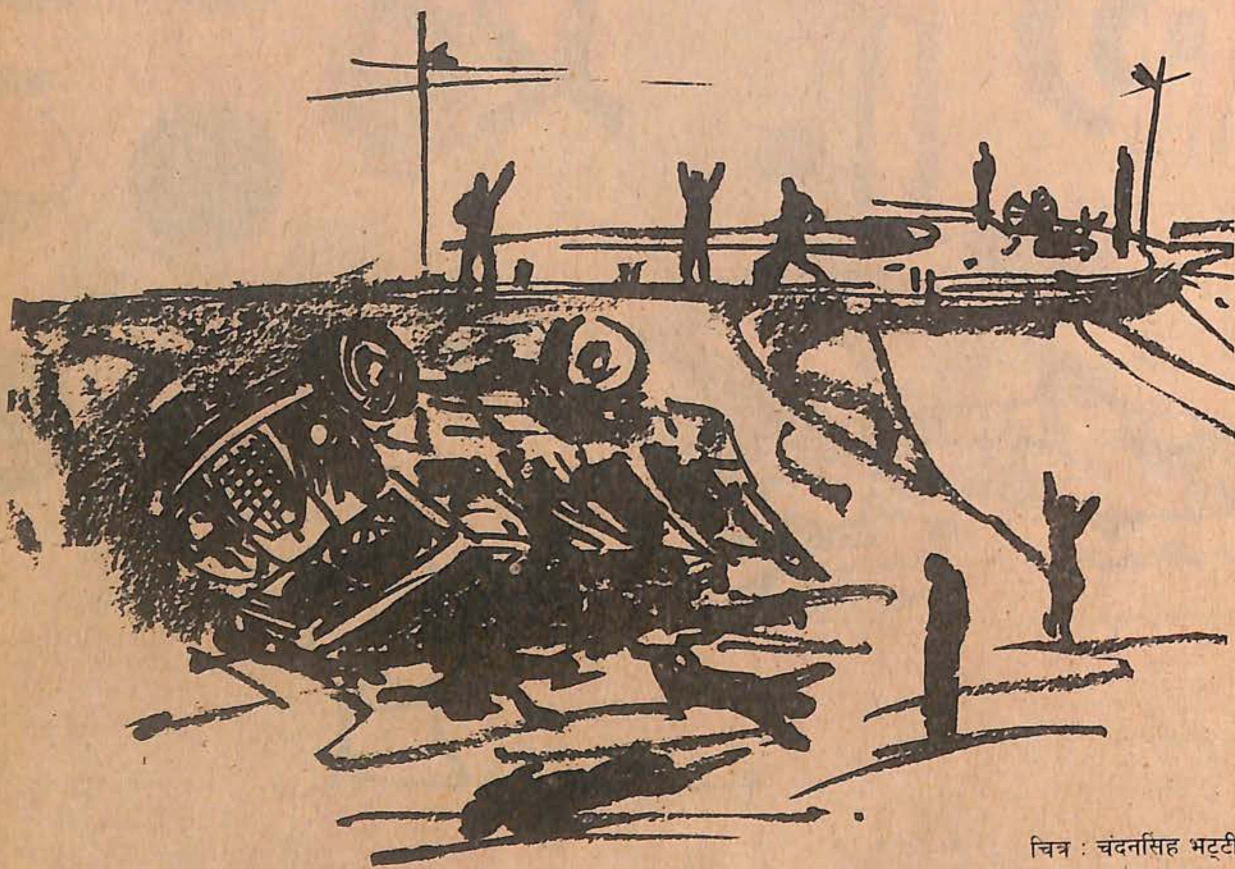


चित्र:-हेमलता विश्वकर्मा, सातवीं, शोभापुर,



चित्र:-बसंत कुमार, सातवीं, पिपरिया होशंगाबाद

नेवरी ट्रक दुर्घटना



चित्र : चंदनसिंह भट्टी

ग्राम नेवरी में नेवरी-हाटपीपल्या सड़क मार्ग पर 19 अप्रैल 86 को शाम के साढ़े छै बजे एक ट्रक पुल के पास पल्टी खा गया। उसमें लगभग 42 आदमी तथा औरतें सवार थीं, जिसमें सभी मजदूर व गरीब थे। जो अपना गांव छोड़कर कहीं मजदूरी के लिए गए थे। लौटते वक्त उनकी किस्मत में अपना गांव देखना नहीं था।

इस दुर्घटना की शुरुआत यहां से होती है-जब ट्रक गांव से गुजर रहा था, वहां मोड़ दाहिनी ओर था और उधर से ही एक लड़का सायकल से आ रहा था। जैसे ही सायकल ट्रक से टकराई कि लड़का नीचे गिर गया और सायकल कुचल गई। ड्रायवर को लगा कि लड़का मर गया है। अत: वह वहां से ट्रक लेकर भागा। उसके हाथ-पैर कांप उठे और सामने मोड़ आ गया। ड्रायवर के कांपते हुए हाथों से ट्रक नहीं मुड़ा और नीचे नदी में उतरने लगा नीचे उतरते देख ड्रायवर ने फिर ट्रक को ऊपर रास्ते पर लाने का सोचा। उसी वक्त ट्रक ने एक दम दो पल्टियां खाईं और यात्री उसके नीचे दब गए। वहां का दृश्य तो एकदम अलग था।

गांव के कुछ लोगों ने यह देखा तो उन्होंने दबे हुए लोगों को निकाला। किसी का हाथ टूटा, किसी-किसी का पैर टूटा और किसी का सर या पेट फूटा आदि। ड्रायवर भी घायल था। गांव से मेले की तरह लोग वहां गए तथा पुलिस भी आ गई। 3 तो वहीं मर गए थे शेष 39 यात्रियों को अस्पताल पहुंचाया गया।

रात भर गांव में इस दुर्घटना के बारे में बात चलती रही और सुबह होते ही अखबार में खबर आई कि नेवरी ट्रक दुर्घटना में छै व्यक्ति मर चुके तथा शेष सैंतीस घायल हैं।

□ सुरेश कुमार चौहान
आठवीं, नेवरी, देवास

सियान मन के आशीर्वाद



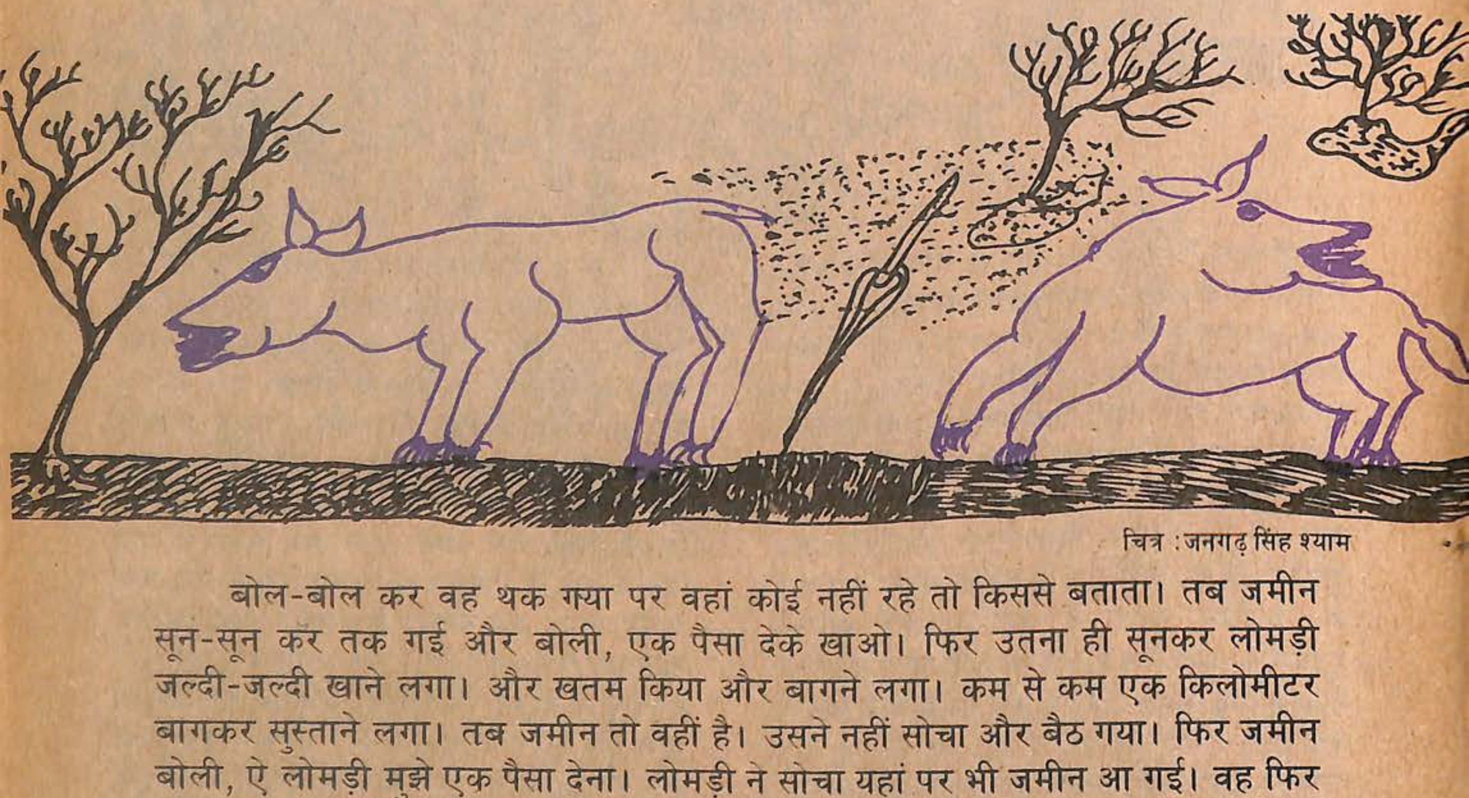
चित्र : चंदनसिंह भट्टी

नांदगांव जिले में एक छोटा सा गांव फुलझर है। सिरतोन में बीस साल पहले फुलझर में फुल झरे। जथा नाम तथा गुण वाली बात है। गांव के दाऊ श्री रोमनाथ गरीब बसुंदरा घर का नई करीस, सतसंग में अपन धनला फूक डरीस। इहीं गांव गांव में एक झन बसुंदरा किसान रहाय। ओकर नाम उभेराम, ओकर पत्नी के नाम मानाबाई है। उभेराम के चार झन बेटा अण दो झन बेटी हे। उभेराम सीधा साधा और मिलनसार रहाय। उभेराम के सिधाई के फायदा ओकर बड़े भाई हा उठालिस करजा हे कहिके। खेती खारला हड़पलीस। कुछ दिन के बाद में मारपीट के घरले हालो निकाल दीस तमोले उभेराम कुछ नई बोलीस मोर ले बड़े आस कहिके बड़े भाई के पाव पड़ के नान-नान लईका मनला धरके निकलेंगे अब रोवत-रोवत सियान मन करा अपना दु:खला बताईस तब सियान मन कथे काला बतानगा तोर बड़े भाई हा मुड़ पेलवा हे। हम मन ओला कइसे समझाबो जी ही कथे उकरे बर तान तोड़थे हमर मनके आशीर्वाद हे बेटा तोर चर-चर झन बेटा हे। भगवान खुशी रखे। काकरो घरला मांग के रहिजा काकरो बीगाड़े ले नई बीगड़ सगा। सीयान मन में कहनाला मान मे बीहीच गांव में अपन जीवन चलाय लागीस। हू तीन साल सुख से चलीस। एक रोज ओकर ऊपर दुख के पहाड़ टूटगे। इहीला कथे दूबर लादू असाढ़ उभेराम के मंझला बेटा सक्त बीमार पड़गे। मानाबाई केरोवई नोंहे। जीही करा लइके मनके मुंह में पानी डारे एक झन के कमई अब छे छे झन खवइया काव पूरनोगा। मानाबाई हां अपन पहिये रहाय। तेला निकाल के उभेरा लादीस अब कथे येल बेचके मोर बेटा के जिनगिला बचाले। गहनाला बेचके अब कुछ इलाज करवाईस। तीन महिना में बेटा अच्छा होगे। मानाबाईला खुशी के ठिकाना नइ हे। मोर बेटा के जिनगी बाचगे कहिके। धीरे-धीरे उभेराम के चारों बेटा बाढ़ना लागीस। उभेराम, अपन चारों बेटाला बने पढ़ईस अब उभेराम मानाबाई के दिनहा फिरगे। चारों बेटा अपन-अपन काम में लगगे। कुछ दिन के बाद में उभेराम के मंझला बेटा के नौकरी के आर्डर आगे। अब नौकरी में चबदीस, उभेराम अण मानाबाई खुशी से फूलगे। अण भगवान से कहीस-हे भगवान जे बेटाला मेहा लटपट बचाएव वही बेटा हा आज मोर खुशी के आंसू बनगे। भगवान मोर चारों बेटा के रक्षा करबे, चारों बेटा के गोड़ में काटा, झन गड़बे दोनों झन चारों बेटाला आशीर्वाद देय लागीस। एक दिन उभेराम पइसाला घर के दाऊ करागीस अब कहिस-दाऊजी तुहर किरपा से मोर बेटा मन नौकरी में चलदीस। दाऊजी तुहर एकसान ला मेहा कइसे भूलाऊं। एदे दाऊजी पईसा दाऊ कथे ये पईसा ला ले जा। उभेराम मेहा उधार नई देयरे हेव तोर बेटा बर देय रे हेव धन्य हे उभेराम तोर जइसे आदमी सहनसीलता दु:खला सुख में बदलके हरदम शांत और हसमुख जा मोर आशीर्वाद हे बेटा भगवान तोर चारों बेटा के रक्षा करे अण पाव में काटा झन गड़े आन सियान मन के आशीर्वाद से उभेराम बसुंदरा से किसान में बदलगे अब सुख से रहन लागीस।

☐ मोतीलाल यादव
लोटाबोड़ (दुर्ग)

लोमड़ी और जमीन

एक समय की बात है। उस समय जानवरों का अकाल पड़ा था। तब एक लोमड़ी एक जंगल में रहता था। उसको आठ दिन तक खाने को ना मिला। तब लोमड़ी भोजन ढूंढते-ढूढते एक जंगल में घूस गया। तब उसे जंगल में एक सेंटीमीटर गाय की हड्डी मिली तो लोमड़ी बहुत खुश हुआ। और हड्डी को इस पार से उस पार कूद-कूद कर कह रहा है, कितने पैसे का ये हड्डी है?



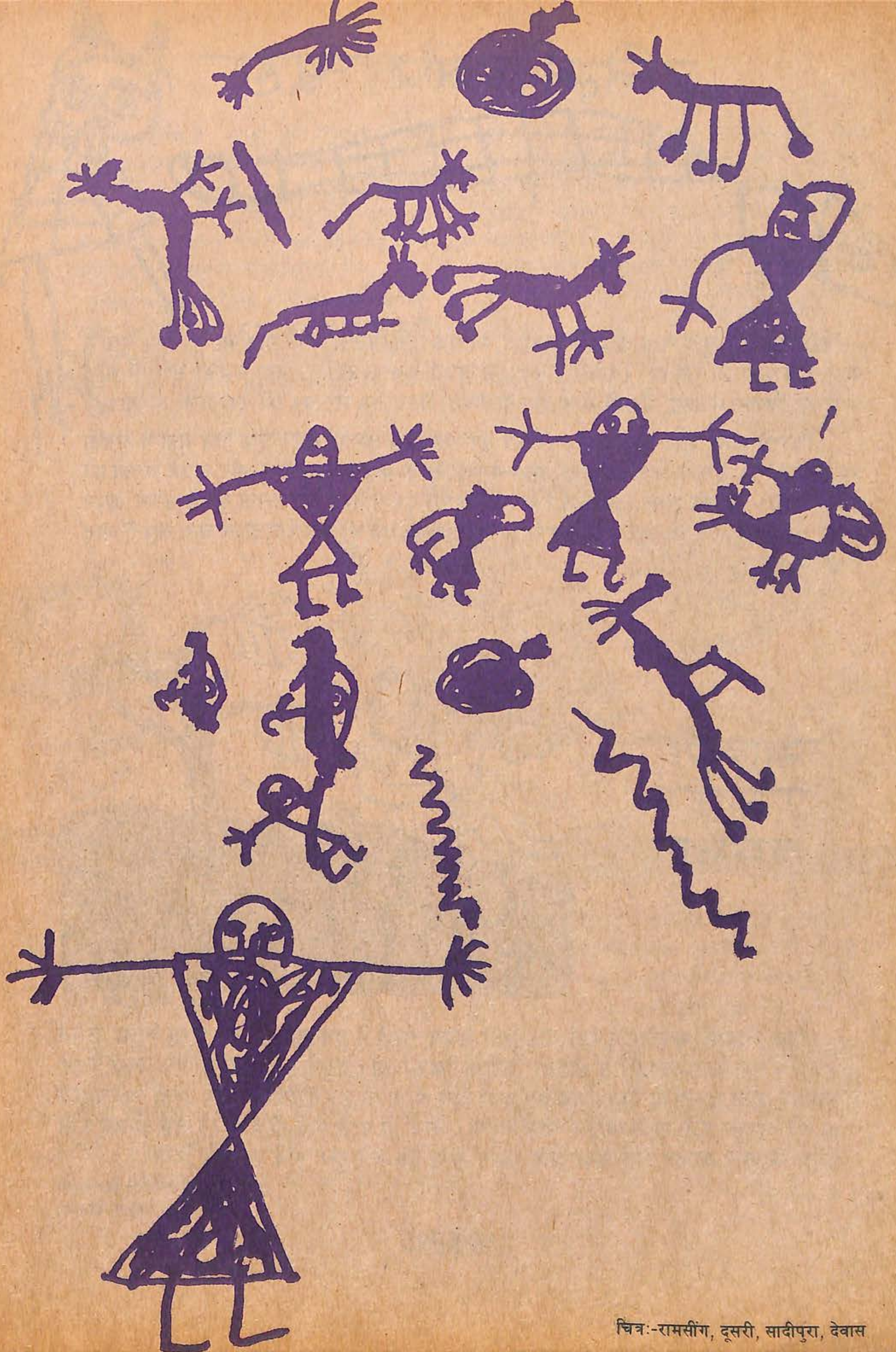
चित्र : जनगढ़ सिंह श्याम

बोल-बोल कर वह थक गया पर वहां कोई नहीं रहे तो किससे बताता। तब जमीन सून-सून कर तक गई और बोली, एक पैसा देके खाओ। फिर उतना ही सूनकर लोमड़ी जल्दी-जल्दी खाने लगा। और खतम किया और बागने लगा। कम से कम एक किलोमीटर बागकर सुस्ताने लगा। तब जमीन तो वहीं है। उसने नहीं सोचा और बैठ गया। फिर जमीन बोली, ऐ लोमड़ी मुझे एक पैसा देना। लोमड़ी ने सोचा यहां पर भी जमीन आ गई। वह फिर भागा। एक-दो किलोमीटर जाकर बोला यहां पर भी जमीन पैसा मांगने आएगी। वहां पर आराम करने लगा। तब फिर जमीन बोली, देना मुझे एक पैसा। लोमड़ी यह सुनकर फिर भागा। एक किलोमीटर जाने पर बोला कि यहां भी जमीन पैसा मांगने आएगी। तब जमीन फिर बोली, देना एक पैसा।

ऐसा करते-करते लोमड़ी भाग रहा था। कि कांटा के जाड़ में घुस रहा था। तब एक कांटा उसके आंख में गड़ गया। और लोमड़ी रोने लगा। तब जमीन फिर बोली, देना मेरा पैसा।

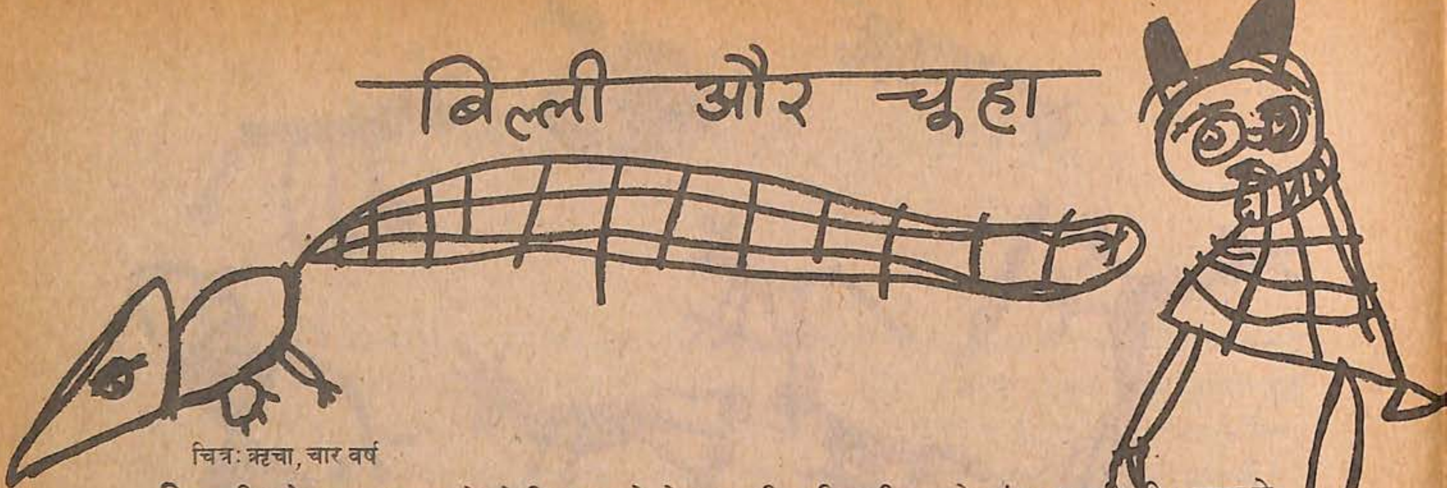
उसकी आवाज सुनकर लोमड़ी गुस्सा होकर बताई, क्यों तुम एक आंख वाले को भोजन दिए रहे कि दो आंख वाले को दी रही।जमीन बोली, दो आंख वाले को।तब लोमड़ी बताई की मेरा तो एक आंख है। जमीन चुप हो गई। इसलिए लोमड़ी चालाक होती है।

□ फूलसिंह ठाकुर
नवमी, छिंदगढ़ (बस्तर)



चित्र:-रामसींग, दूसरी, सादीपुरा, देवास

बिल्ली और चूहा



चित्र: ऋचा, चार वर्ष

बिल्ली और चूहा नाम के दो मित्र रहते थे। एक दिन बिल्ली अपने गांव जा रही थी। चूहा ने पूछा, तुम कहां जा रही हो? बिल्ली ने कहा, मैं अपने गांव जा रही हूं। चूहा ने कहा, मुझे भी साथ ले चलो। बिल्ली ने कहा, मैं नहीं ले जा सकती दोस्त। दोस्त, तुम मेरे घर की रखवाली करना।

बिल्ली चली गई। चूहा दिन-भर घर की रखवाली करता रहा। एक दिन चूहा ने अपनी शादी कर ली। उसके दो बच्चे हुए। चूहा ने बिल्ली के कपड़े चुरा लिए और अपने बच्चों को पहना दिया। बिल्ली मस्त चली आ रही थी। उसने दूर से देखा की उसके कपड़े उसने अपने बच्चों को पहना दिए तो उसे बहुत गुस्सा आया। बिल्ली चूहे को मारने दौड़ी तो चूहा अपनी जान बचाकर भागा।

□ प्रफुल्ल परसाई

खाकरी का पत्ता



चित्र : जनगढ़ सिंह श्याम

एक आदमी बाजार जा रहा था। जाते समय रास्ते में एक खाकरी का पौधा मिला, उसने उसमें से एक पत्ता तोड़ लिया और दो पत्तों को छोड़ दिया। उसने उस पत्ता को एक जगह स्थिर रखकर अपने घर चला गया। जब वह दूसरे दिन आया तो उसने देखा कि वह पत्ता सूख गया है तो वह दौड़ता हुआ उसी पौधे के पास पहुंचा। जो वे दो पत्ते थे वे नीचे झुकने लगे तो वह उसी पत्ता के पास जाकर रोने लगा और कहने लगा कि मैंने इस पत्ते को मार दिया।

□ सागर मल विश्वकर्मा
चांसिया (देवास)

मेरा स्कूल

जंगली ऐरिया है। रास्ता कुछ लंबा है। सुबह जाता हूं, साम तक आ पाता हूं उसके बाद थोड़ा-सा खाना खा पाता हूं। और सो जाता हूं। दूसरे दिन फिर वही दौड़ लगाता हूं।ऐसा हमारा स्कूल है। थोड़ी-सी देर हो जाती है तो मास्टर साहब अकड़ जाते हैं। कहते हैं, आज स्कूल में झाड़ू कौन लगाऐंगा।

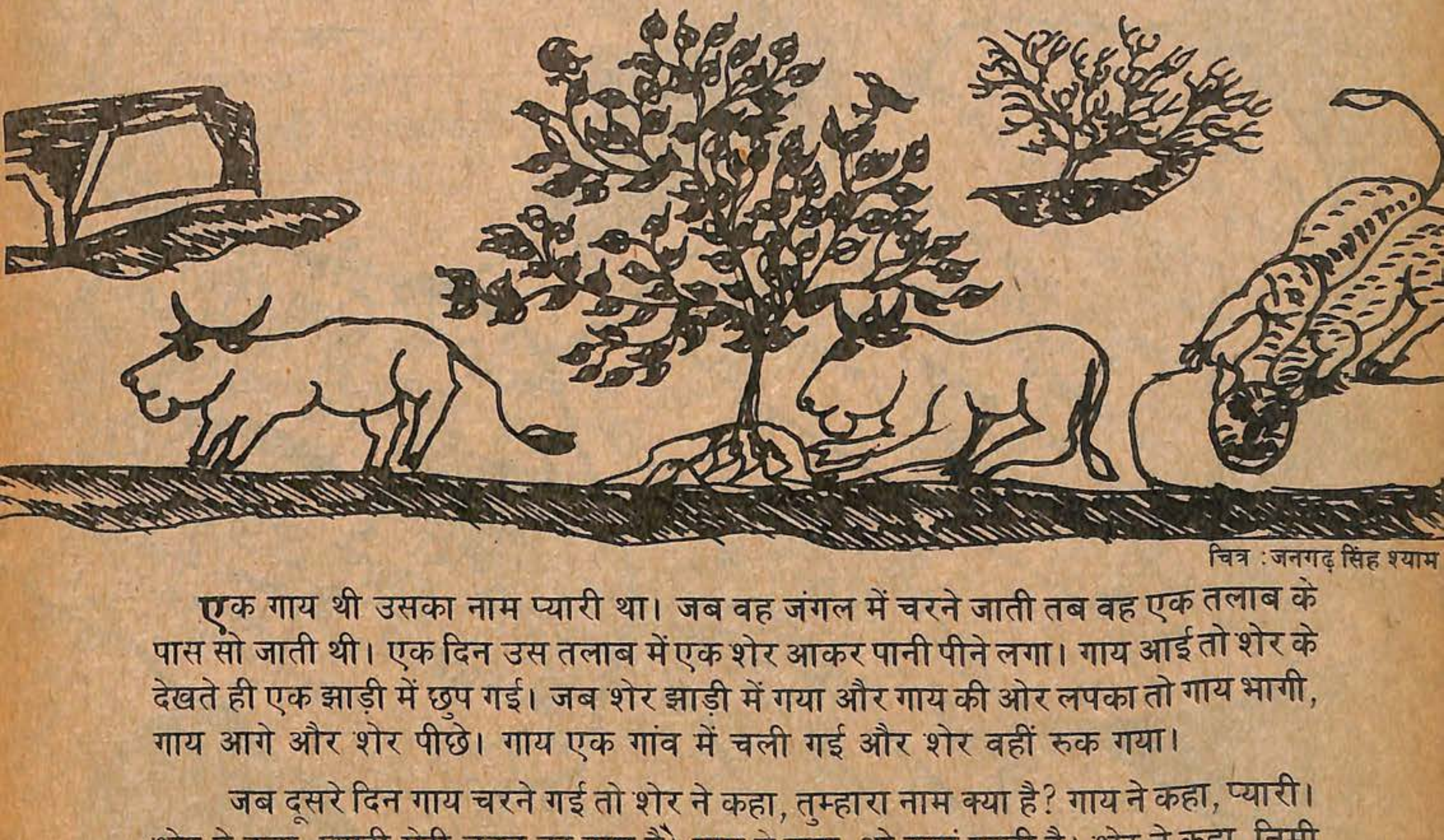
हमारा स्कूल ऐसा है कि उसमें चपरासी तक नहीं है। कुल (3)मास्टर हैं। सारे स्कूल का झाड़ू लड़के ही लगाते हैं। हमारे यहां के मास्टर साहब कहते हैं कि, "जो करे गुरु की सेवा, वो खावे आखिर में मेवा।" बस इसी दोहे को अपना रखा है।

हमारे मास्टर जी बहुत चालाक हैं। वो स्कूल में लड़कों से दूध मंगवाते हैं और चाह बनवाते हैं। शिक्षा नाम की कोई चीज ही नहीं। लड़कों से कड़े प्रश्न पूछना, नहीं बता पाएं तो पीटना। मास्टर जी इस तरह पीटते हैं कि सारा स्कूल गूंज उठता है। महामारी-सी होने लगती है। सारे स्कूल में प्रलय-सी छा जाती है। हमारा स्कूल आठवीं क्लास तक है। उसमें 100 लड़के हैं और मास्टर तीन हैं। वो भी डेली एक न एक रह जाते हैं।

अब बताओ, लड़कों का क्या कसूर है, ऐसा हमारा स्कूल है।

□ अनिल कुमार श्रीवास्तव
बड़ेरा-बुजर्ग, ग्वालियर

गाय और शेर



चित्र : जनगढ़ सिंह श्याम

एक गाय थी उसका नाम प्यारी था। जब वह जंगल में चरने जाती तब वह एक तलाब के पास सो जाती थी। एक दिन उस तलाब में एक शेर आकर पानी पीने लगा। गाय आई तो शेर के देखते ही एक झाड़ी में छुप गई। जब शेर झाड़ी में गया और गाय की ओर लपका तो गाय भागी, गाय आगे और शेर पीछे। गाय एक गांव में चली गई और शेर वहीं रुक गया।

जब दूसरे दिन गाय चरने गई तो शेर ने कहा, तुम्हारा नाम क्या है? गाय ने कहा, प्यारी। शेर ने कहा, प्यारी मेरी बहन का नाम है। गाय ने कहा, ओ कहां रहती है। शेर ने कहा, निमी गांव में। गाय ने कहा, मैं भी निमी गांव में रहती हूं। शेर ने कहा, क्या तुम मेरी बहन हो। गाय ने कहा, हां, मैं तुम्हारी बहन हूं।

उस दिन से गाय और शेर में मित्रता हुई।

□ केशरी मल विश्वकर्मा
छटवीं, चांसिया, देवास

ये मजेदार पत्र तथा प्रमाण पत्र प्रतियोगिता में आई रचनाओं से चुने गए हैं।

सम्पादक महोदय,
चकमक (भोपाल)

मैं आपके पास यह लिफाफा भेज रहा हूँ, जिसमें लेख, कविता (साथ में चित्र), चित्रकथा भेज रहा हूँ. मगर मैं इस प्रतियोगिता का ईनाम नहीं लेना चाहता. आप हर माह चकमक का एक अंक भेजते हैं, वही आपकी उदारता है. मैं तो बस, यही चाहता हूँ कि आप मेरे भेजे रचनाओं को, जिसे आप एक-एक अंक छोड़कर प्रकाशित करते हैं, उन्हें हर अंक में कोई न कोई रचना प्रकाशित किया करें. "ही..ही.. गुदगुदी." नामक स्तंभ के लिए भी मैंने कई रचनाएँ भेजे थे, उन्हें भी कृपया प्रकाशित किया करें.

आपका -
मुकेश स्वर्णकार
पता: पो. बलौदा, जिला-बिलासपुर (म.प्र.)

प्रतियोगिता
और आकर्षक
अरेरा कालोनी भोपाल
मध्य प्रदेश - भोपाल
462016

चकमक पत्रिका बहुत पसंद आई।
चकमक का निर्माण करने वाले भैया को बधाई।।
मैं चकमक मगवाना चाहता हूँ और मैं कहानियां, कविता एवं भाषा पहेलियां कार्य भी रचनाएं भेजूंगा [illegible] चकमक द्वारा प्रकाशित कीजिए

सम्पादक
चकमक
ई 1/208
भोपाल

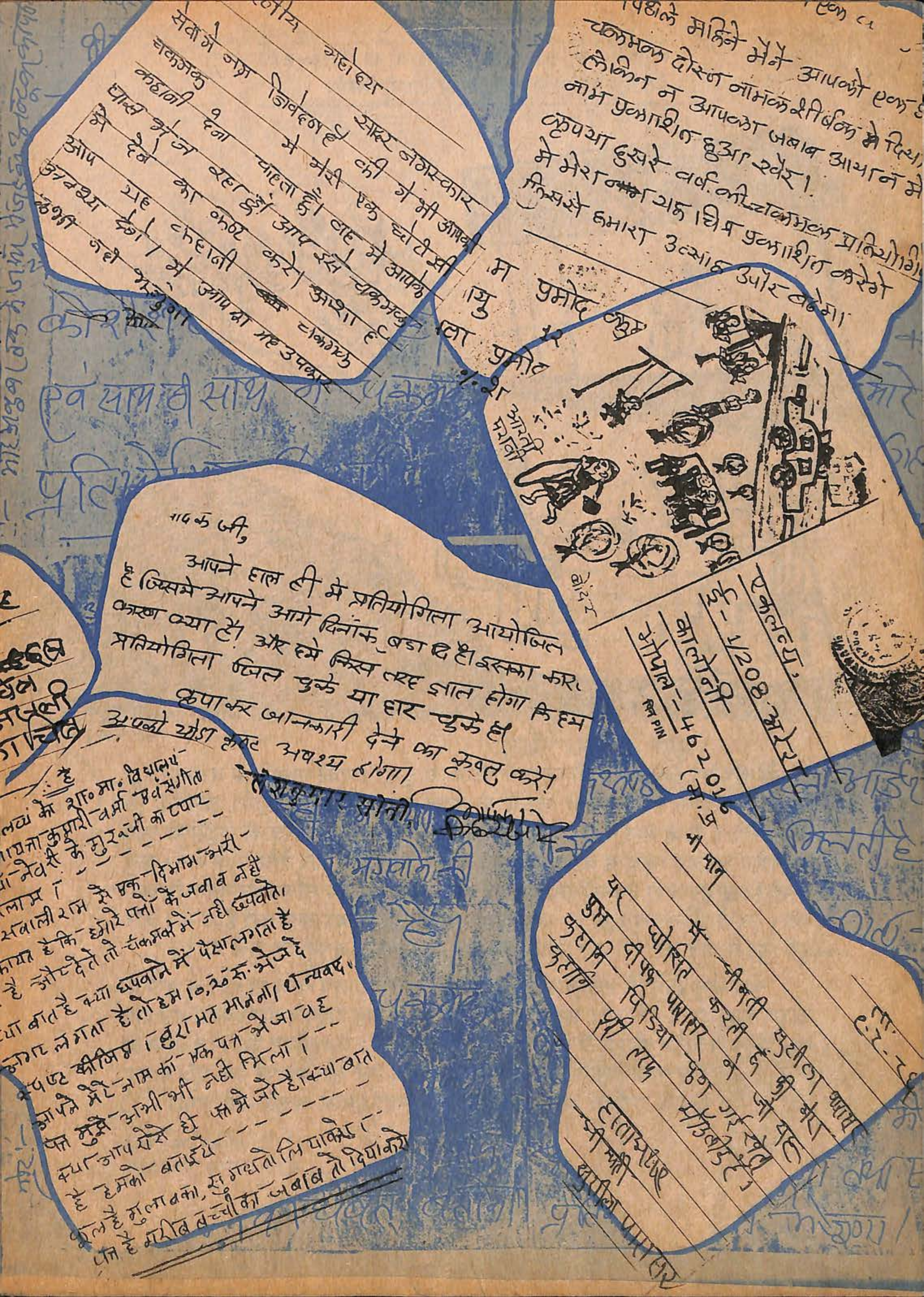
संलग्न तीनों चित्र अपने में मौलिक व अनुरूप हैं। आशा व विश्वास है स्थान पा सकेंगी.
प्रतियोगी

यह चित्र मैंने बनाया है। यह चित्र मैंने लिख दिया है। तथा चित्र के पीछे 'स्कूटर' को [illegible] वह नहीं है। प्रतियोगिता तो इसमें तरकीब क्या है।

NAME. RAJENDRA KUMAR
S/O Mr. M.
मेरा पता → S/O

प्रमाणित किया जाता है कि इस कागज के पिछले पृष्ठ का चित्र मेरी पुत्री कु. आरती कक्षा 8वीं उम्र 13 वर्ष के द्वारा बनाया गया

श्रीमती आर. म.



सेवा में श्रीमान सम्पादक महोदय
सादर नमस्कार
सविनय निवेदन है कि मैं भी आपकी चकमक में मेरी एक छोटी सी कहानी देना चाहता हूँ।
मैं भेज रहा हूँ आप इसे चकमक में
देने का कष्ट करें। आशा है
आप यह कहानी अवश्य छापेंगे। मैं आपका यह उपकार कभी नहीं भूलूंगा।
पिछले महीने मैंने आपको एक
चकमक दोस्त नामक स्तंभ में दिया,
लेकिन न आपका जवाब आया न मेरा
नाम प्रकाशित हुआ। खैर।
कृपया दूसरे वर्ष की चकमक प्रतियोगिता
में मेरा चित्र प्रकाशित करेंगे
जिससे हमारा उत्साह और बढ़ेगा।
प्रमोद कुमार
एकलव्य,
ई-1/208 अरेरा
कालोनी
भोपाल-462016 (म.प्र.)
पाठक जी,
आपने हाल ही में प्रतियोगिता आयोजित की है जिसमें आपने आगे दिनांक बढ़ा दी है इसका कारण क्या है? और हमें किस तरह ज्ञात होगा कि हम प्रतियोगिता जीत चुके या हार चुके हैं।
कृपा कर जानकारी देने का कष्ट करें।
आपकी थोड़ी कृपा अवश्य होगी।
सोनी
सलाम। सवाली राम से एक दिमाग भरी सवाल है कि हमारे पत्रों के जवाब नहीं आते हैं और देते तो चकमक में नहीं छपवाते। क्या बात है क्या छपवाने में पैसा लगता है? अगर लगता है तो हम 10, 20 रु. भेज दें। बुरा मत मानना। धन्यवाद।
मैंने नाम का एक पत्र भेजा वह अभी भी नहीं मिला।
क्या आप ऐसे ही क्या बात है हमको बताइये।
गरीब बच्चों का जवाब तो दिया करो
श्री मान
घोषित
श्रीमती सुशीला
प्रकाशित
लताएं
शीला पवार

स्कूल में कभी तुम्हारी या तुम्हारे साथी की पिटाई हुई है?
उस दिन तुम्हें कैसा लगा उसकी कहानी लिखो।



चित्र : जनगढ़ सिंह श्याम

मैं और मेरे स्कूल के साथी स्कूल में बैठे थे। साहू सर हमको सामाजिक अध्ययन पढ़ा रहे थे। उन्होंने पढ़ाते-पढ़ाते छुट्टी के पहले हमको होमवर्क दिया। होमवर्क था प्रश्नावली 3 बी के आठ सवाल और नकलं। इतने में हमारी दो पिरेड की छुट्टी हो गई। हम लोग घूमकर स्कूल में बैठ गए। इतने में घंटी बज उठी और फिर पढ़ने लगे। घंटी बजते ही ओमप्रकाश नकल लिखने लगा। हमारे नए सर आए लेकिन वह नकल लिखता रहा। सर ने उसको खूब मारा। उसकी यह गलती थी कि वह खड़ा नहीं हुआ था। और पूरी छुट्टी होने की घंटी बज उठी और हम लोग अपने-अपने घर चले गए।

जब कल आए तो घंटी बज चुकी थी और स्कूल भी लग चुका था। देर से आने के कारण साहू सर ने मेरी और मेरे साथी की पिटाई की। यह देखकर ओमप्रकाश हंस रहा था। हमने दो पिरेड की छुट्टी में उसकी बहुत पिटाई की। जब गणित का पिरेड आया तो सिर्फ मैं और तीन साथी सवाल, नकल लाए बाकी सब पिटे और हम पर एक-एक थप्पड़ पड़ा क्योंकि हमारी राइटिंग अच्छी नहीं थी और वहां हमको अच्छा नहीं लगा।

□ बलराम सिंह राजपूत
आठवीं, पिपरिया (होशंगाबाद)

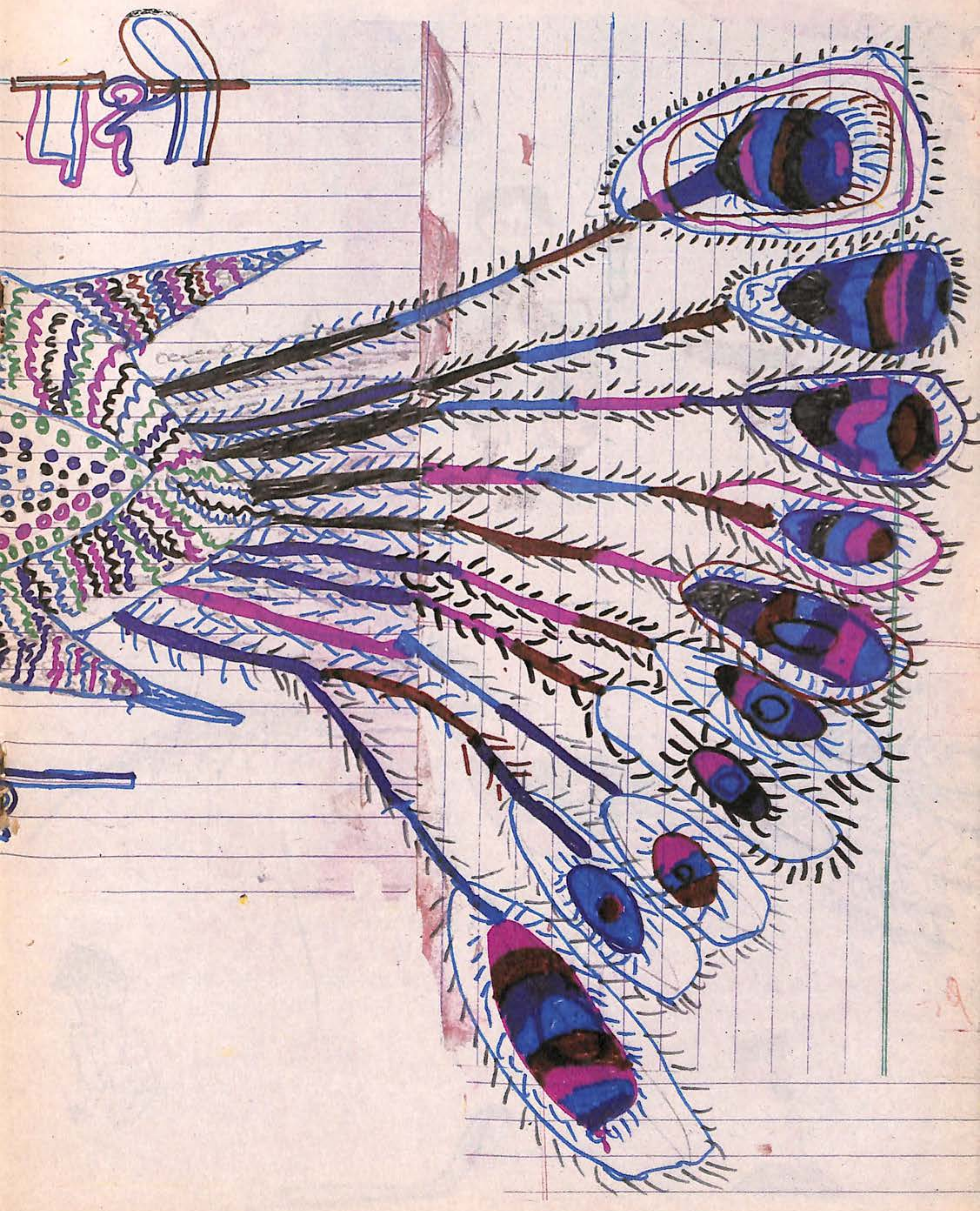


चित्र:-विभा वासानी, आठवीं,
बनखेड़ी, होशंगाबाद



चित्रः-नम्रता पाण्डेय, छठवीं, छतरपुर

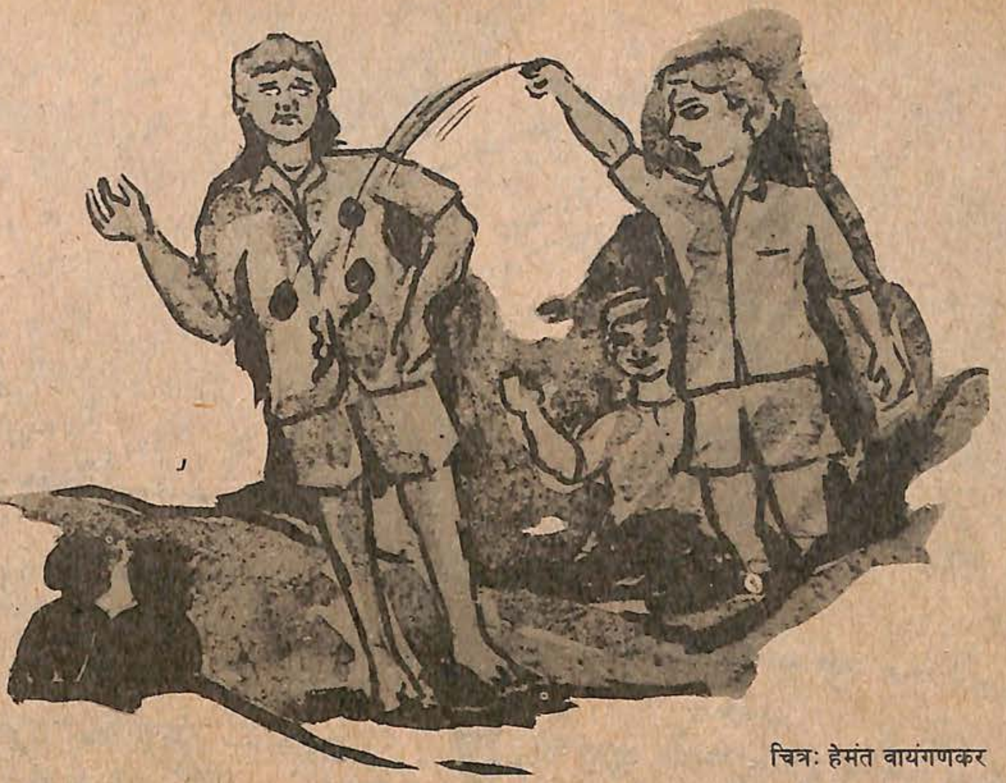

राष्ट्रीय
मो



चित्र:-इकबाल आठवीं मानकुंड देवास



चित्रः-जगदीश पाटीदार, नवमीं
अरलावदा, देवास



चित्र: हेमंत वायंगणकर

अपने दोस्त या सहेली से खेलते-खेलते झगड़ा हुआ, उस झगड़े की कहानी लिखो।

हम चार दोस्त हैं, मेरा नाम बबलू है। और मेरे दोस्तों का नाम गोलू-अल्लू-मोहन है। जिसमें गोलू सीधा लड़का है। और हम तीनों चालाक हैं। हम लोग चालाक हैं तो हम लोग पहले बहुत उधम करते थे। एक बार हम लोगों की लड़ाई हो गई थी, कि एक दूधवाले के दो लड़के थे। एक रामू और दूसरा अंधा था। हालांकि थोड़ा-थोड़ा दिखता था। उसकी उम्र 13 -14 साल की है। उसका नाम विनोद है। उसे हम तीनों ने उसके मुंह में केले का छिलका ठूंस दिया। तो वह पकड़ने को दौड़ा तो गोलू पकड़ा गया। और विनोद ने उसे चार-पांच तमाचे जमा दिए। गोलू ने भी जमा दिए। इतने में उसका बड़ा भाई रामू आ गया तो गोलू ने उसे गाली दे दी। तेरी.....हो जाए तो रामू ने गोलू को मार दिया तो हम लोग उस पर झूम पड़े। और उसकी हालत खस्ता कर दी। और रामू को भागना पड़ा। और यह कहता गया कि तुम्हे बताऊंगा तो अल्लू कहता है-हां-हां जा घर जाकर दूध पीले। फिर लड़ना। और मैंने कहा-हम लोग से लड़ने के लिए बाई, बाबा से पूछ के आ। मगर गोलू कहता है डर के क्या होगा अब। मैंने कहा-कुछ नहीं होगा। फिर हम लोगों नें मिलकर एक योजना बनाई। मोहन और गोलू सड़क के उस पार के पटियों के पास हों और हम और अल्लू सड़क के इस तरफ। उसी टाइम पानी भी गिरा था। तो मिट्टी गीली थी। तब हम लोग ने उस मिट्टी के लड्डू बनाए। उसी टाइम रामू निकला तो मोहन ने उसे मिट्टी मार दी। उसके कपड़े खराब हो गए। तब वह उनके पीछे दौड़ा इधर हम लोग ने इसकी साइकिल उठा लाए। उसमें दो दूध से भरे डब्बे थे। हम लोग ने उसे खोलने की कोशिश की। अल्लू डिब्बे में से दूध पी रहा था। मैंने सोचा मैं भी। मगर सेजा न जमा। तो मैंने सोचा कि न रहे बांस न बजे बांसुरी मैं उन दोनों डब्बों में गोबर भर दिया। तो वह हम लोग के पीछे दौड़ा। हम लोग भागे। मोहन ने जल्दी से दूध का डब्बा मुंह में लगा लिया तब उसके मुंह में गोबर चला गया तो उसे गुस्सा आ गई। तो उसने साइकिल व डब्बे नाले में गिरा दिए और उसके ऊपर झूम गया। तो हम भी आकर झूम गए और उस रामू से बदला चुका लिया। और सब अपने-अपने घर चले गए।

□ मोहम्मद जकी
आठवीं, गाडरवारा (होशंगाबाद)

प्रमाणित किया जाता है कि मेरे छोटे भाई अनिल कुमार के द्वारा यह निबन्ध मौलिक है। इसकी उम्र 16 वर्ष है यह कविता [illegible] के बाद यह सारे ग्राम में [illegible] पूर्ण विश्वास है कि यह कविता इसी के द्वारा बनाई [illegible] इनकी रचना प्रति [illegible]

कविता भेज रहा हूँ। आप उसे जरूर छापिएगा। अंकल जी, [illegible] हर रचना में मौलिकता [illegible]

योगेन्द्र कुमार पाण्डेय

श्री हरी

चकमक सम्पादक महोदय जी

नमस्ते

निवेदन समाचार यह है कि कुछ भी लिखने में गलती होगा तो इसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ मैं कविता तथा कहानी में अपना नाम पता तथा आयु तो लिख दिया हूँ लेकिन जो कुछ चुटकुला मैं अप के दिया गया चित्र मैं मैं अपना नाम, पता, आयु नही लिखा था मैं अपना पता फिर से इस पत्र पर लिख देता हू [illegible] आप अगर मेरे पास कुछ भी भेजे तो कक्षा का नाम लिखना मत भूलना क्योंकि हमारे गाँव में मेरे नाम का एक और है जो भी मेरे ही जाति का है इसलिए कक्षा का नाम लिखना मत भूलना

आपका भगी रामवर्मा
आयु 15 वर्ष कक्षा 10 वी
ग्राम नगपुरा पो. आ. चन्दरपुर
फार्म

* चुटकुले एवं पहेलियाँ

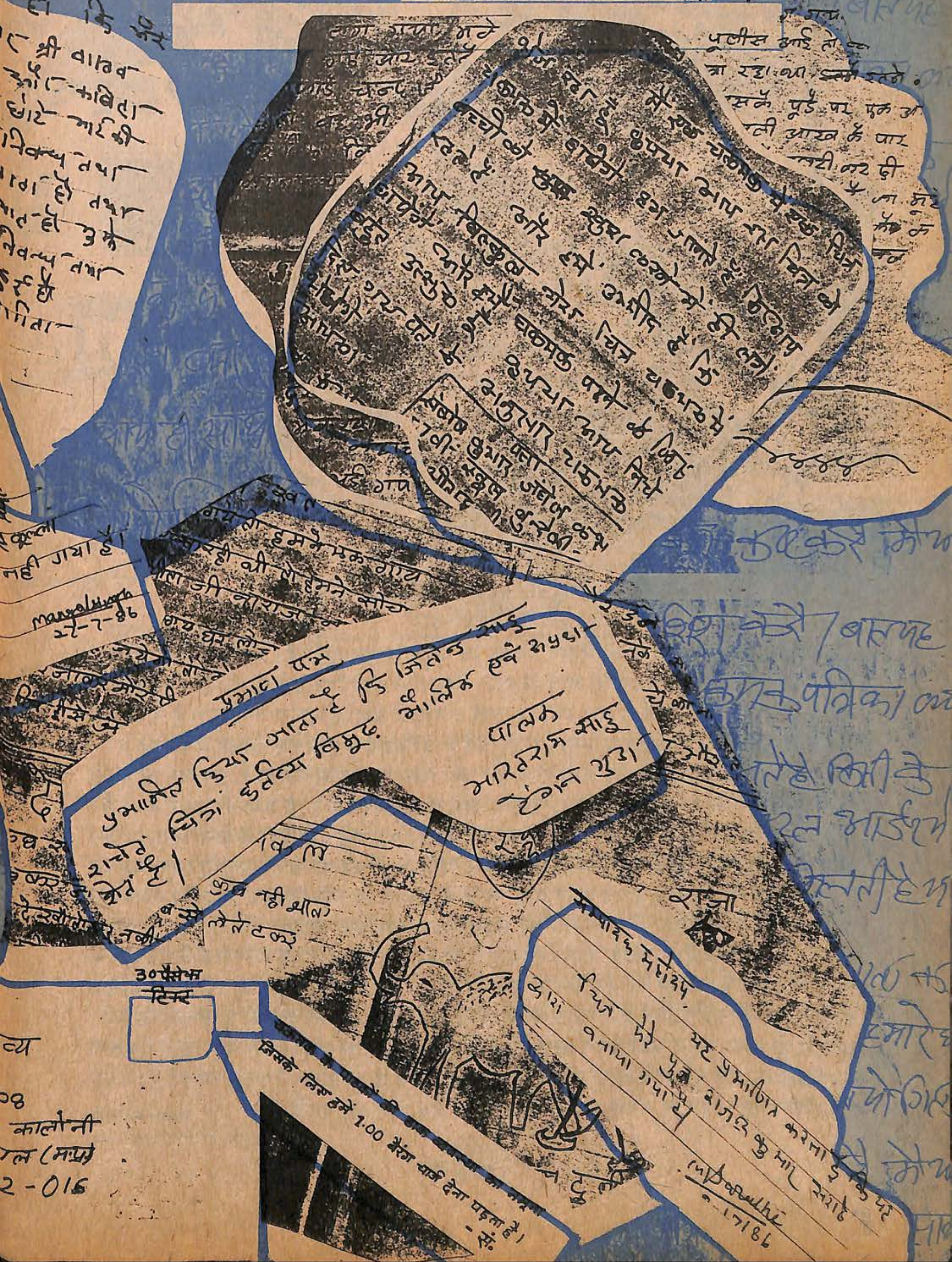
एक बाप, पचास बेटा, क्या है—
उत्तर— माचिस

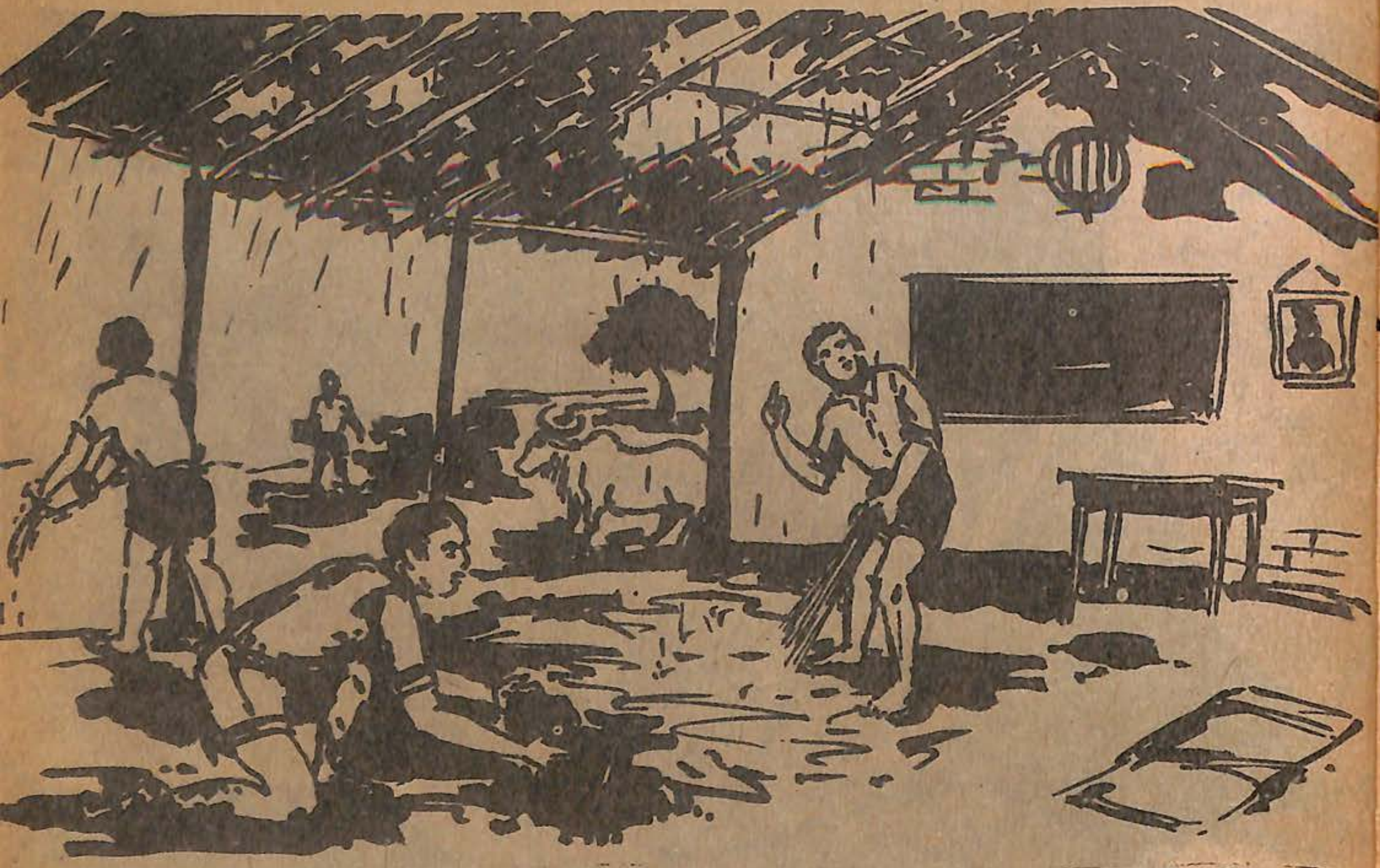
प्रमाणित करता [illegible] मैं [illegible] चित्र मौलिक [illegible] कहीं से चुराया [illegible]

BOOK-POST

प्रेषक-
संतोष कुमार सोनी
C/o राम - छोटेलाल सोनी
सोनारपारा बलौदा
थाना - अकलतरा पि. 495559
तहसील - जांजगीर
जिला - बिलासपुर

यह मजेदार पत्र तथा प्रमाण पत्र प्रतियोगिता में आई रचनाओं से चुने गए हैं





चित्र: हेमंत वायंगणकर

बरसात में तुम्हारे स्कूल की हालत क्या होती है और तुम स्कूल कैसे पहुंचते हो।

बरसात में हमारे स्कूल के मैदान की हालत बहुत खराब होती है। और उस दिन तो कई लड़के आते है और कई लड़के तो आते ही नहीं। जिस दिन पानी गिरता है उस दिन तो पढ़ने में भी मन नहीं लगता है। पढ़ाई में मन इसलिए नहीं लगता है क्योंकि जब पानी गिरता है तो अच्छा लगता है।हम स्कूल तो बहुत कठिनाई से पहुंचते हैं।कठिनाई से इसलिए पहुंचते हैं क्योंकि घर के बाहर अर्थात सामने भी कीचड़ जमा होती है। और जिस दिन पानी गिरता है उस दिन तो घर से बाहर निकलने का मन ही नहीं होता। क्योंकि जब बरसात गिरती है तो जमा कीचड़ में हाथ, पैर गंदे एवं बरसात में भीगने के कारण बिमार होने का डर रहता है। बारिश के दिनों में बाहर बस कीचड़ ही कीचड़ होती है। बड़ी कठिनाई से हम पानी में कीचड़ को पार करते हुए स्कूल पहुंचते हैं। और जो लोग स्कूल से एवं दूसरे गांवों से आते हैं उन्हें तो बड़ी दिक्कत होती है। कीचड़ में इतनी दूर से वे साईकिल पर भी नहीं आ सकते हैं। अत्याधिक बारिश होने से बहुत से लड़के स्कूल नहीं आ पाते हैं। इसलिए स्कूल की छुट्टी भी हो जाती है। अधिक बारिश होने से स्कूल के अंदर भी पानी भर जाता है। कई लड़के पानी के कारण बहुत देर से स्कूल आते हैं। जब अधिक बारिश आ रही होती है तो हम स्कूल अगर छाता लेकर भी जाएं तो बारिश में गीले हो जाते हैं। बारिश के समय स्कूल आते समय बस्ते में जो किताबें होती हैं वो थोड़ी-बहुत भींग जाती हैं। बड़ी मुशकिल से बस्ते को पानी से भींगने से बचाते हुए हम बड़ी मुशकिल से स्कूल पहुंचते हैं। स्कूल में बारिश की वजह से समय पर न पहुंचने पर हमें डांट भी पड़ती है।

□ आकाश चंदनानी
आठवीं, पिपरिया (होशंगाबाद)

बरसात के दिनों में बारिश बहुत होती है और इसके बाद स्कूल की हालत बहुत गंभीर रहती है। स्कूल में गाय गोबर करती है। हम लोग दस बजे स्कूल आते हैं तब हम उसकी सफाई करते हैं इसलिए हमारे यहां पर घर से निकलना मुशकिल होता है क्योंकि घर के सामने पानी बहुत आ जाता है। और पानी गिरने के कारण हमें शाला जाने में देर हो जाती है, क्योंकि बारिश के कारण हमा री चप्पल कीचड़ में फंस जाती है और हमारे कपड़े खराब होने के कारण सूखते नहीं हैं। इसलिए हम शाला नहीं आते हैं। और हमारे ग्राम में सड़क नहीं और हम स्कूल जाते तब हमको बारिश में बहुत कठिनाईयां बढ़ती हैं।

बारिश के दिनों में स्कूल में बैठने की दिक्कत रहती है इसलिए स्कूल के ऊपर जो कवेलू हैं वो फूटा हुआ है। उसमें से पानी गिरता है और रास्ते में बहुत ही कीचड़ हो जाने से ग्रामवासियों को बहुत अड़चन होती है। इसलिए ज्यादा नहीं निकलते क्योंकि कपड़े गंदे हो जाते हैं।

□ जुबैदा बी, आठवीं
शोभापुर (होशंगाबाद)

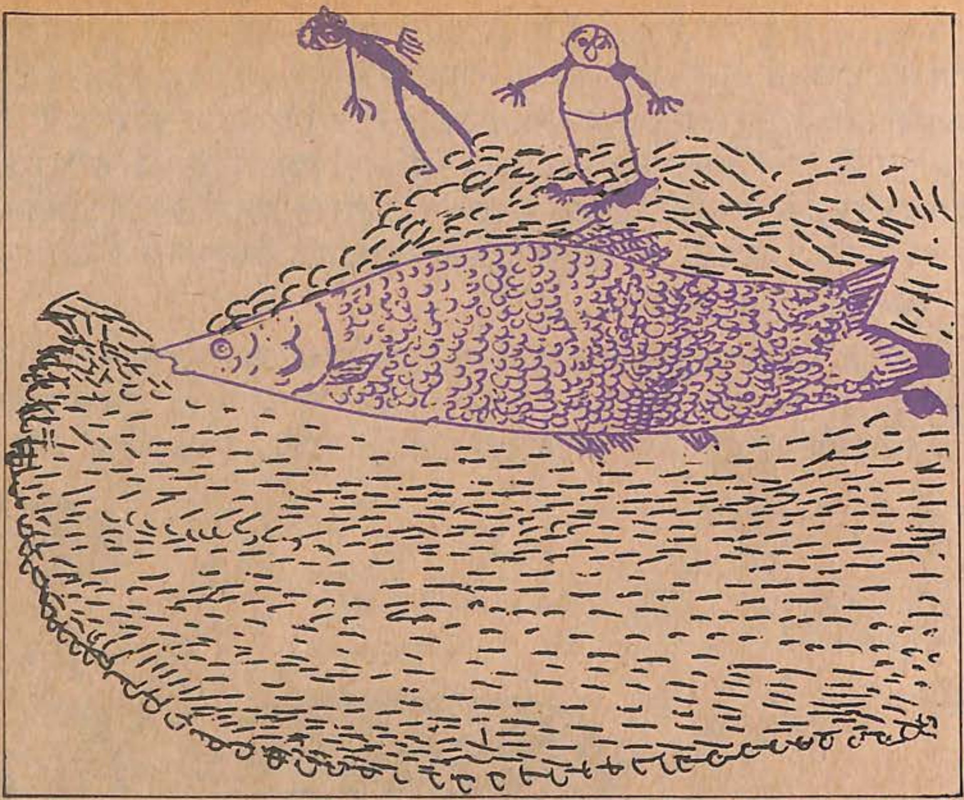


मच्छर सिंह

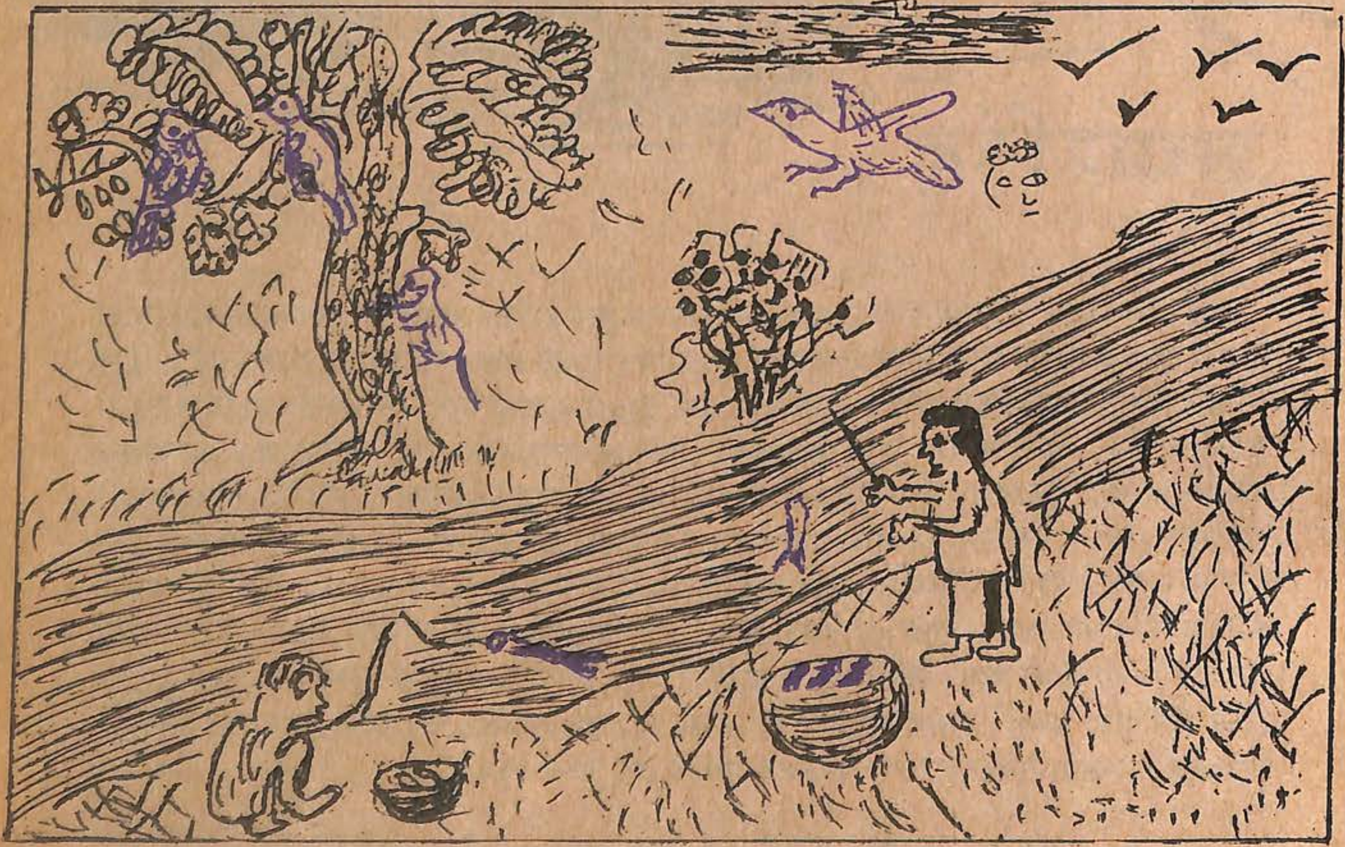
चित्र : हेमंत वायंगणकर, भोपाल

गर्मी का दिन था। एक बस कुलावड सिटी तरफ जा रही थी। रास्ते में उसे एक मच्छर मिला मच्छर साइड में आकर ड्रायवर से बोला, ये ड्रायवर गाड़ी रोक। ड्रायवर ने गाड़ी नहीं रोकी। मच्छर उसके पीछे दौड़ने लगा। ड्रायवर ने एक दम ब्रेक लगा दिया तो मच्छर गाड़ी से टकरा गया। गाड़ी से टकरा जाने से गाड़ी भाग गई। आगे उस मच्छर का दोस्त आ रहा था। वह करीब एक किलोमीटर दूर था। मच्छर ने अपने पेंट की जेब से वायरलेस निकाला और बोलने लगा, ओ मेरे दोस्त दौलत, इस बस को रोक लेना। उसने सामने देखा बस आ रही थी। वह रास्ते में खड़ा हो गया। जेब से पिस्तोल निकाली और ड्रायवर पर गोली मारी। गोली मारते ही गोली ड्रायवर के सीने में लगी और वह मर गया। ड्रायवर के मरते ही मच्छर बस में बैठ गया। थोड़ी देर राह देखने पर उसका दोस्त आ गया। उसने अपने साथी से पूछा, कहां है हरामखोर ड्रायवर। उसने उत्तर दिया मैंने मार डाला। उसने मरे हुए को देखा और बोला और मत रोक गाड़ी। उसने बांह चढ़ाकर दो चांटे दिए और उसे फेककर बस लेकर चले गए।

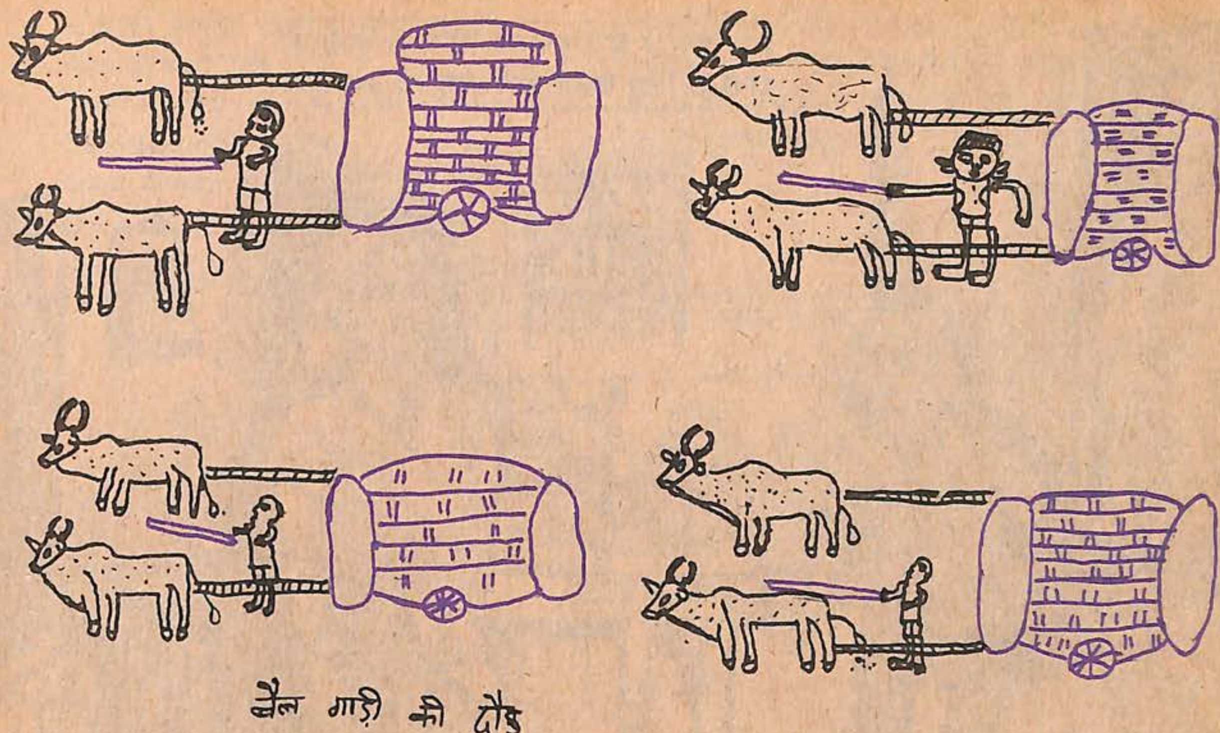
□ ओम प्रकाश पाटीदार
देहरिया साहू (देवास)



चित्रः-प्रेम कुमार मेहरा, छटवीं, बटेसरा, नरसिंहपुर



चित्रः-श्रद्धा जैन, गाडरवारा, होशंगाबाद,



चित्र:-क. सविता ड्लाराम, सातवीं, सोहागपुर, होशंगाबाद



चित्र:-सुनीता कुमारी अग्रवाल, आठवीं, गाडरवारा, नरसिंहपुर



चित्र:-बैनी बाई कुम्हार, सातवीं,
पिपरिया, होशंगाबाद



चित्रः हेमंत वायंगणकर, भोपाल

भोला मेहमान आ गए पानी दो। साहब इसी पलका में आ जाओ। अम्मां अम्मां बिड़ी दो।

भोला कितने मेहमान हैं,-अम्मां जी पांच हैं एक आदमी तो बिलकुल बूढ़ा है। आरे इधर बातें करता उधर बिड़ी ला जल्दी से और दद्दा उधर क्यों खड़े हो इधर इसी पलका में बैठो।

अरे मन्नु अम्मां से कहा दो कि चाय बनाओ। दादा से, लीजिए चाय। उस दादा को दो। तुम्हीं लो बेटा जरा पानी दो चलो। खाना खा लीजिए। अच्छा भोला कहां है, जल्दी से एक दरी बिछा दो। अरे मन्नु रोटी थाली लगा दी। हां पिताजी, तो हर हर नरमदे हर। हां लगन दो दादा जी।

रोटी, नहीं, नहीं बेटा नहीं, दादा एक लो।

कमला नमक ला। साहब लड़की ऐ ही है। सा. मेरी लड़की तो सांवली है। आरे सा.संसार में काले-गोरे रहते हैं। मैं एक बात पूछता हूं मेरा लड़का तो बी.काम. पढ़ा है, आपकी लड़की।

सा. मेरी लड़की तो आठवीं पास है। तो लड़का का तो मोटर सईकिल और पंखा, टि.वी. और बीस हजार रुपया नगद चाहिए।

नहीं सा. मैं तो आपके लड़के को दस हजार रुपये और टि.वी. पंखा दूंगा। नहीं पिताजी तो मैं शादी नहीं करवाऊंगा मुझे बीस हजार रुपए और मोटर साइकिल भी चाहिए।

नहीं रामदी की इच्छा हो वो तुम्हें सब कुछ देगे। और सा. मेरी बरात था सुहागत (स्वागत) इतना अच्छा होना चाहिए, सब अच्छा हो। बैलगाड़ी बरात लेकर आएगी। बैलों का घासी-भूसा अन्य प्रकार की चिजों से सुहागत होना है। तो सा. मैं बरात दिनांक 27.8.86 को स्टेशन में दस बजे लेकर आ जाऊंगा। प्यारे भोला जीजाजी के ऊपर रंग डाल दो। क्यों रे मन्नु तूं क्यों नहीं सुनता। जीजाजी शर्ट उतार दो। अरे रेने दो क्या होता है।

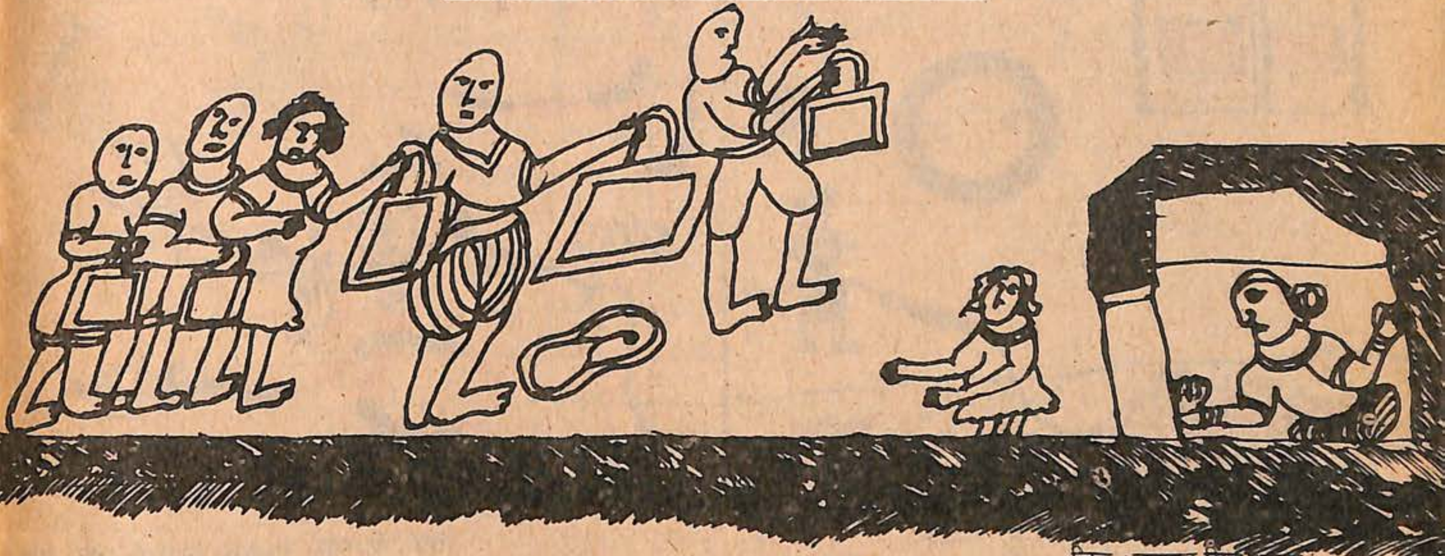
समदी जी समदौनों को आप साथ लेकर क्यों नहीं आए।

आरे इमलिया वाले मामा क्यों नहीं बोलते। समदी क्या कह रहे हैं। आरे भाई कहन दो। अपन दौनो समदौनों को लेकर आएंगे। वाई दामाद के पैर पड़ लो। भोला तू इधर आ। लाला को इधर बुला।

जीजाजी आपको अम्मां जी बुला रही हैं।
लालाजी चाय पीलो।
अम्मां जी थोड़ी सी।
क्यों, लाला जी?
अम्मां मैं बहुत कम पीता हूं।
अच्छा अम्मां जी चलें जी।
आप लाला जी समदन को राम राम कहना जी।
समदी सा. जय राम जी की। सा. समदी जय जय राम जी की। हमरी तरफ से गलती हुई है क्षमा करना। नहीं सा. हमरी गलती हो आप क्षमा करना। सा. समदौनों को राम राम कहियो।

□हरिबाबू नागवंशी
आठवीं, उमरधा
होशंगाबाद

क्या तुम कभी राशन लेने गए हो? उसकी कहानी बनाकर लिखो।



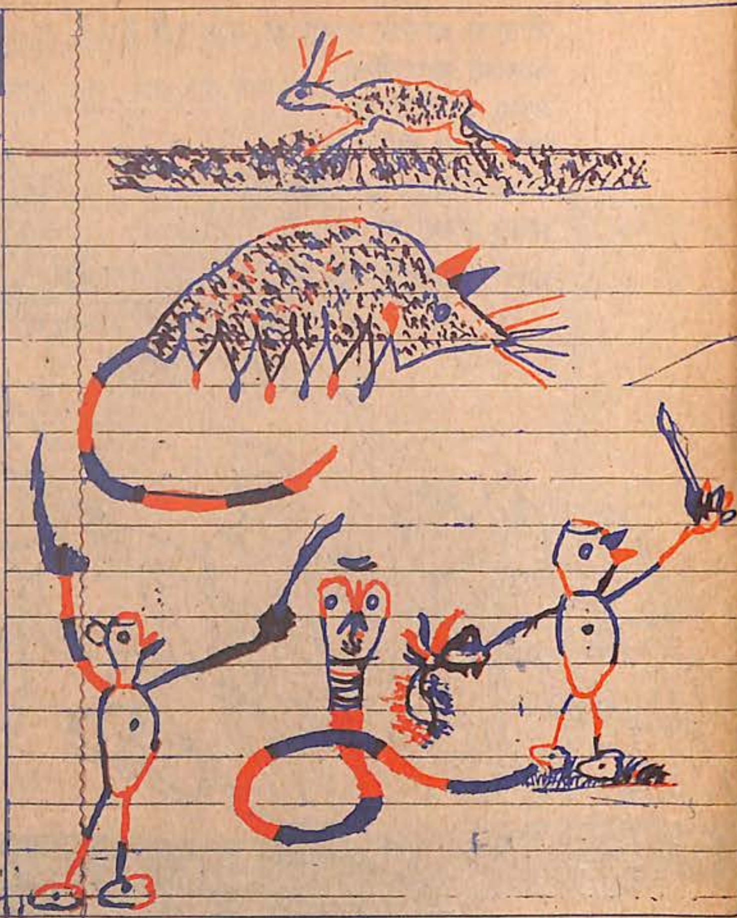
चित्र : जनगढ़ सिंह श्याम

एक दिन मैं पढ़ रही थी। उस दिन 29 तारीख थी। मम्मी बोलीं जाओ और पता लगाआ कि कंट्रोल में शक्कर की दूकान खुली है कि नहीं। मैंने कहा, मैं क्यों जाऊं, भैया नहीं जा सकते। तो वे बोलीं, बेटी बो तो कालेज गया है, मालुम नहीं कब लौटे। थोड़ी दूर ही तो है। चली जा। मैं कापी-पुस्तक बंद करके चप्पल पहनकर जाने लगी तो वे बोलीं, थैली और परमिट, पैसे भी ले जा नहीं तो बार-बार आएगी। सो मैं थैली में परमिट रखकर पैसों को मुट्ठी में रखकर चल दी। पंद्रह मिनिट बाद राशन की दूकान पर पहुंची। वहां देखा तो दिन में तारे नजर आने लगे। क्योंकि वहां दूकान के आंगन में पैर रखने लायक जगह नहीं थी, सो किसी प्रकार अंदर घुसने की जुगाड़ लगाने लगी। फिर भाग्य से दूकान में से एक लड़का निकला और सबको लाइन से लगाकर चला गया। थोड़ी देर लोग शांत खड़े रहे। इतने में एक मेरे बराबरी वाली लड़की सैंडिल फटकारते हुए आई और मेरे आगे लगने लगी। मैंने उसे मना किया तो नहीं मानी, लड़ने लगी। मैंने सोचा लग जाने दो वह सामने लग गई और मुझे मुड़कर घूरकर देखने लगी। मैं नहीं बोली। फिर लोगबाग लाइन तोड़ने लगे। मैं भी थोड़े आगे पहुंच गई। मेरा नंबर भी आ गया। मैंने उस दूकानदार, जिसकी तोंद बढ़ी थी और जो आसन लगाए बैठा था, ने परमिट और पैसे मांगे मैंने दे दिये। वह बोला छुट्टे पैसे दो। मैं बोली नहीं हैं। तो बोला, दो माचिस ले लो। मैंने कहा, पैसे दो वह बोला छुट्टे भी नहीं हैं और माचिस भी नहीं लेती। मैंने डरकर माचिस ले ली। फिर शक्कर दे दी गई। कुढ़ती हुई बाहर निकली तो सोचा, अब निकलूंगी कैसे, भीड़ तो बहुत है। पर जैसे तैसे हिम्मत की और घुस गई। बाहर निकली तो पैर की एक चप्पल गोल थी। भीड़ में ही छूट गई। मैंने सोचा, भाड़ में जाए चप्पल। मैं तो घर चली। घर पहुंची तो मम्मी ने खूब डांटा, चप्पल लेके आओ। मैं फिर आई और दो घंटे बैठकर जब भीड़ छटी जब मैंने चप्पल उठाई। मैं दूकान वाले को मन ही मन गालियां देते हुए घर आ गई। पहली बार मेरी ये हालत हुई। मैंने कान पकड़ लिए कि अब नहीं जाऊंगी।

□ हेमलता साहू
सातवीं, पिपरिया
होशंगाबाद



चित्रः-सुरेश कुमार पटैल, सातवीं, चांदोन, होशंगाबाद



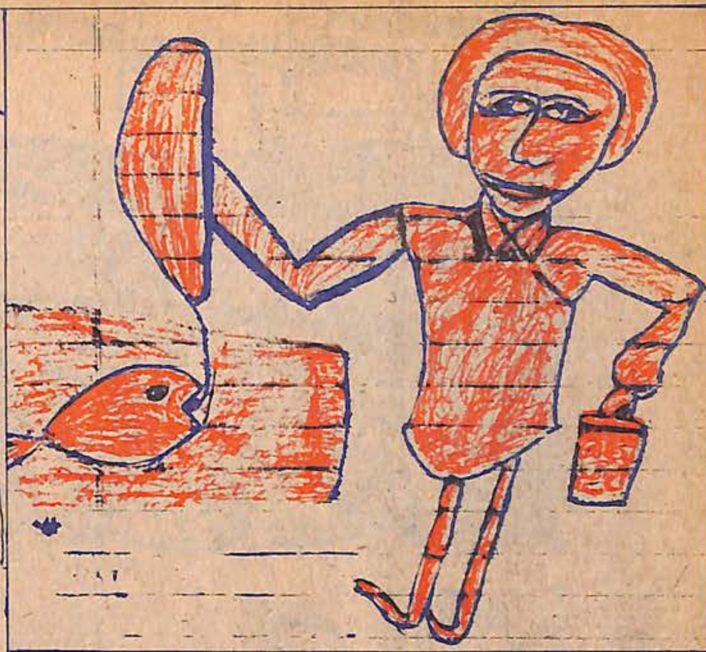
चित्रः-जीवनपुरी गोस्वामी, टिगरिया छोटा, देवास



चित्रः-संजय कुमार मालवीया, छटवीं, सोहागपुर होशंगाबाद



चित्र:-चंद्रभूषण परसाई, सातवीं, रानी पिपरिया, होशंगाबाद



चित्र:-बालाराम छीपा, आठवीं, गाडरवारा



चित्र:-वंदना शर्मा,चौथी, देवास



चित्र : जनगढ़ सिंह श्याम

बारिश में जब नदी में पूर आता है तो क्या-क्या होता है? कहानी बनाकर लिखो।

एक बार हमारे गांव की नदिया का पूर आया था जी। कि जब बारिश में करीब आठ दिन बरसा हुई थी। हजूर आपको तो मालूम ही होगा कि भौत करी बरसा हुई थी तो हमारी नदिया आ गई तो का करें कि हमारे गांव के मोड़ा-मोड़ी सब चले गए। जैसे के बरात आगे में जात हैं तो भैय्या लाइन लगी के औ भैया रे ये जा नदिया तो देखो कम से कम पचास-साठ आदमी मोड़ा-मोड़ी जुड़ गए। तो भैयाजी का भव कि नदिया चड़त-चड़त सौसर हो गई क्योंकि बरसा अच्छी भई थी। असल में जोरदार तो हमरे गांव के पटेल लोग दूध बेचने जाते थे। तो दो आदमी डिब्बा लेकर घुसने लगे और जाते-जाते गलक में पड़ गए और फिर भई गप्प-गप्प करने लगे इतने में दो लोग और इकट्ठे हो गए तो वे जल्दी भगे। भगते-भगते कूद पड़े। वे चिल्लाकर बोले-हाय बचाओ, हाय बचाओ।दो लोग एक दूसरे से कहते-ओ भैया अपन नदिया में ने कूदहें बे। उनके दूध के डिब्बा गिर गए और बे बराजोरी बचे भैया। वा दिन से हमरी नदिया में कोई आदमी नहीं कूदे।

हजूर, तो ऐसी हमरी नदिया का पूर है, हमारे काका को एक सगौन का बड़ा मोटा डूंडा मिला। उन्होंने सात आदमियों से उसे घर लाए और फिर पतरी लकड़ी पकड़ी। जो अभी हम लोग जलाते हैं। और डूंडा के हमने दरवाजे बनवाए हैं तो वे दरवाजे हमारे मकाने में लगे हैं। जो अगर नदिया में लकड़ी आ जाए तो हमारे गांव वाले लोग पकड़ते हैं। एक बार मैं खुद गया था तो मेरी कसम मैंने डंगरा-कलींदे पकड़े थे और बहुत सारे लोगों ने भी पकड़े।आपने भी पूर देखा होगा जी।एक बार नदिया आई तो एक आदमी कूद पड़ा तो बह गया और बहते-बहते चिल्लाया-भैया रे मोहे पकड़ो। मैंने कई मैं तोसे कै थी का कूद जा,तू तो लकड़ी पकड़ रहो थो।मैं कई मत कूदे। तू तो कूद पड़ो लकड़ी काजे, न तेरी लकड़ी पकड़ानी और हम न होते तो तू मर जातो। हमारी नदिथा का पूर भौत ज्यादा आता है जी।

□हीरालाल अहिरवार
सातवीं, रानी, पिपरिया,
(होशंगाबाद)



चित्र: हेमंत वायंगणकर, भोप

सरपंच जी ने कुंडी खुदाई

एक बार गांव में सरपंच सहाब ने स्कूल के पास कुंडी खोदायी तो उसमें स्कूल के 2 बालक पड़ गए। तो फिर हमारे गांव के लोगों ने कहा कि सरपंच सहाब आपने बहुत गलती की है। तो सरपंच सहाब ने कहा कि मैंने क्या गलती की है। तो हमने कहा की स्कूल के पास कुंडी खोदाई क्यों। तो सरपंच सहाब नेकहाकी मैंने तो तुम्हारे पानी के लिए खुदवाई गई। तो हमने कहा कि तुमने खुदवाई तो इसको तुमने पुरी पक्की क्यों नहीं बनवाई। तो सरपंच सहाब ने कहा कि पैसा नहीं तो कैसे बनवाए। तो सब लोग ने कहा कि तुम्हारे पास सरकारी पैसा है तुम क्यों नहीं खरच करे हो। तो सरपंच सहाब ने कहा कि पैसा तो है पन थोड़ा है। तो हमारे गांव वाले मेमबर सहाब ने कहा कि मैं तुमको पैसा दुंगा। तो सरपंच सहाब ने कहा कि कुन्डी नहीं बांधी जाएगी।

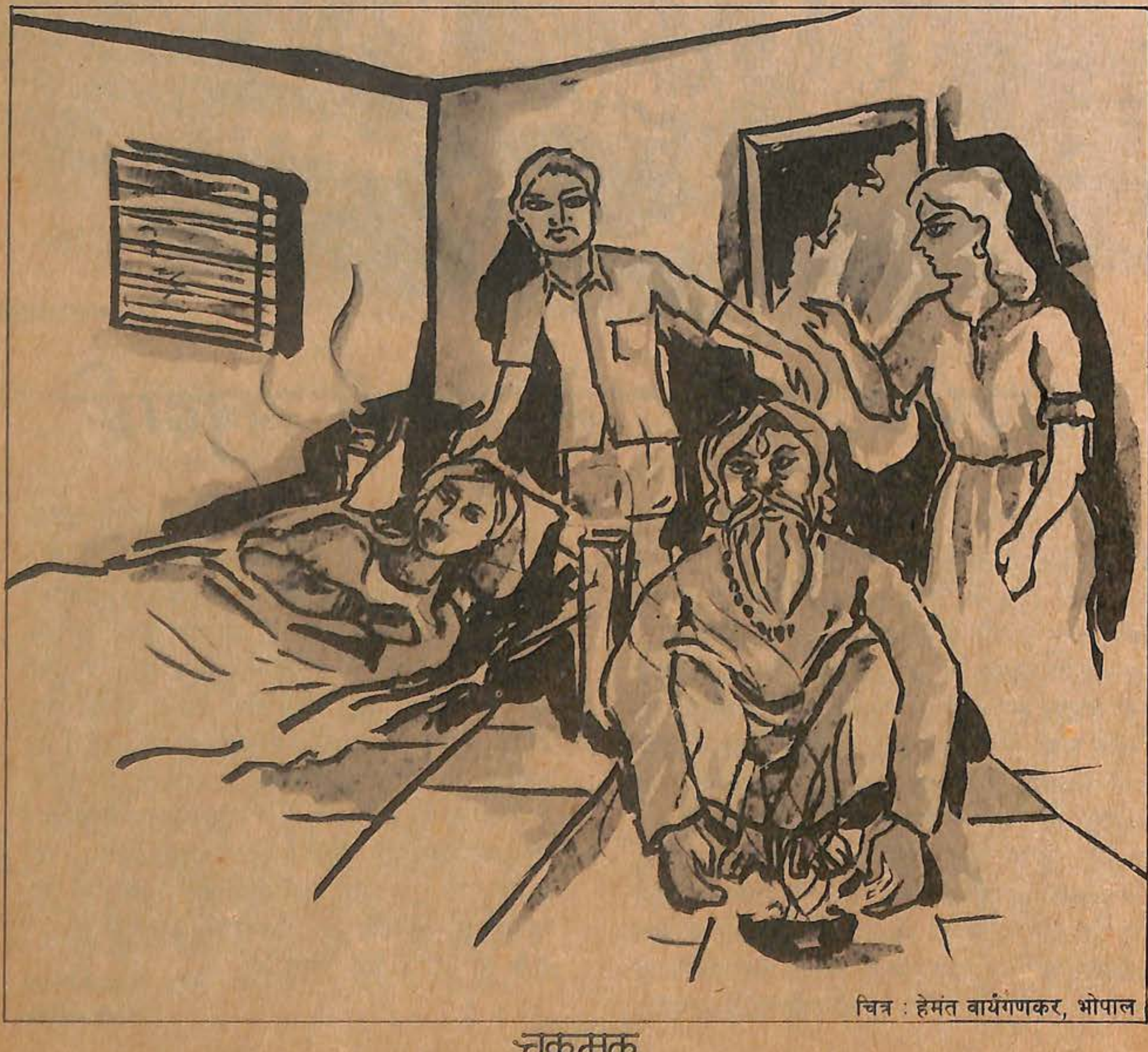
तो फिर हमारे गांव वाले लोगों ने रिपोट की तो पुलिस आ गए। तो सरपंच सहाब ने कहा की मेरे पास पैसा नहीं तो काय से कुन्डी बन्धाई जाए। तो पुलिस वालों ने कहा की आपने स्कूल के पास कुन्डी खोदाना किसने कहा। तो सरपंच सहाब कुछ न बोले। तो हमने पुलिस वालों से कहा कि सहाब तुम ये कुन्डी पुरवा दीजिए। तो पुलिस वालों ने उनको कहा की अभी ये नहीं पुरवाई जाएगी। ये तो सरकारी फन्दा है तो फिर हमको क्या करना है। पुलिस वालों ने कहा कि तुमकी इच्छा है तो हमने कहा की सहाब ये कुन्डी पुरवा दीजिए। और इसके पास एक बमा (हेंडपंप) लगा दीजिए तो फिर पुलिस वाले ने कहा की तुम्हारी यही इच्छा है तो हमने कहा हां सहाब यही इच्छा है।

□ मेहरबान
खरेली (देवास)

मैं बैठा हुआ किताब पढ़ रहा था कि किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। वह दस्तक देने वाला आदमी डाकिया था, वह पत्र देकर चला गया। वह मेरे मित्र नसीम का पत्र था। नसीम मेरा बहुत पुराना दोस्त था। उसके मां-पिताजी घर सरीके रहते थे, इनका घर हमारे घर के बाजू में था। मैं पत्र पढ़ने लगा जब पत्र पढ़ चुका तो मैं बहुत चिंता में पड़ गया। उसमें लिखा था, कि रेशमा दीदी की तबियत बहुत खराब है। परीक्षा देकर जल्द से जल्द यहां चले आओ।

पत्र रखकर मैं अपने अंतिम पेपर की तैयारी करने लगा। दूसरे दिन पेपर देकर मैं गांव जाने के लिए बस स्टैंड चल पड़ा। जब मैं घर पहुंचा तो देखा एक साधू बैठा किसी चीज को जलाकर धुआं कर रहा था मैं उसे बुझाने के लिए जाने लगा तो नसीम ने मेरा हाथ पकड़ कर रोक लिया। उसने कहा कि मां-पिताजी बहुत गुस्सा होंगे। मैंने कहा, रेशमा दीदी धुंए में बेहोश पड़ी हैं। तब नसीम ने कहा कि, ये साधू बहुत पहले आया है। लोगों को जादू के रूप में बिना जलाए आग लगाकर दिखाना तथा अन्य चमत्कार आदि दिखाकर रोज खाना और पैसा ऐंठता है।

जब हम लोग बात कर आए तब तक वह साधू जा चुका था और रेशमा दीदी धुंए के कारण बेहोश हो चुकी थीं। मैंने जल्दी से जाकर सब खिड़की दरवाजे खोल दिए और जल्दी से नसीम को पलंग उठाने को कहा और दीदी को दूसरे कमरे में ले गए। मैं जल्दी से अर्जुन के घर गया, क्योंकि उसके पिता डाक्टर थे, उन्होंने दीदी को देख मुझे एक चिट्ठी दी। मैं दवाई ले आया। अगले पल रेशमा दीदी अस्पताल में थी तभी मांजी और पिताजी भी आ गए। उन्होंने डांटकर घर वापिस ले आए इस पर मैं खूब दुखी हुआ। वे फिर से वही ढोंगी साधू को ले आए। वह घर आए तो एक मटका हाथ में लिए हुए थे। मैंने पूछा, मटका क्यों लाए हैं?



चित्र : हेमंत वायंगणकर, भोपाल

तो उन्होंने डांट दिया। डांटकर बड़े रौब से कहा, सवा किलो उड़द की दाल ले आओ। भई, दाल भी आ गई।

फिर उन्होंने मटके में पानी डालकर उड़द की दाल डाल दी और एक दिए से मटके को आटे के लेप से बंद कर दिया। और आग पर रख दिया। कुछ देर बाद मटके में से कत्थई रंग का कोई द्रव्य निकलने लगा तो एकदम घबरा गए। उनसे मैंने घबराने का कारण पूछा तो कहा कि साधु ने कहा था कि सवा किलो उड़द की दाल लेकर एक मजबूत मटके में डालकर एक चौथाई पानी डालना फिर इसे आटे से चिपकाकर आग पर रख देना और उसके पास रेशमा को सुला देना। उनका पलंग ऐसा रखना जिसमें धुंआ उनके ऊपर जाए यदि मटके में छन-छन की आवाज आए तो समझना रेशमा दीदी ठीक हो जाएंगी। नहीं तो उसमें कत्थई खून और मटके में छन-छन की आवाज आए तो समझना रेशमा दीदी के ऊपर शनि का प्रकोप है। फिर पिताजी ने मटका उठाकर दिखाया तो इसमें छन-छन की आवाज आ रही थी। मां तो रोने लगी। मैंने उसे ध्यान से देखा और जोर से हंसा और बताया कि देखो उड़द की दाल में कार्बोहाइड्रेट है जो गरम होकर आस्वन हुआ। यह गरम तार जैसा पिघला पदार्थ बन गया। यह किसी भूत-प्रेत का साया नहीं है। तब पिताजी ने पूछा, पर घड़ा ठंडा होने से छन-छन आवाज क्यों आती है। तब मैंने मुस्कराकर कहा कि, उड़द की दाल के छिलकों की आवाज आती है।

जब घड़ा ठंडा हुआ तो मैंने सबको खोलकर दिखाया उसमें दाल के जले भाग पड़े थे। फिर मैंने हिलाया तो सुरीली आवाज आई। सब हंस पड़े।

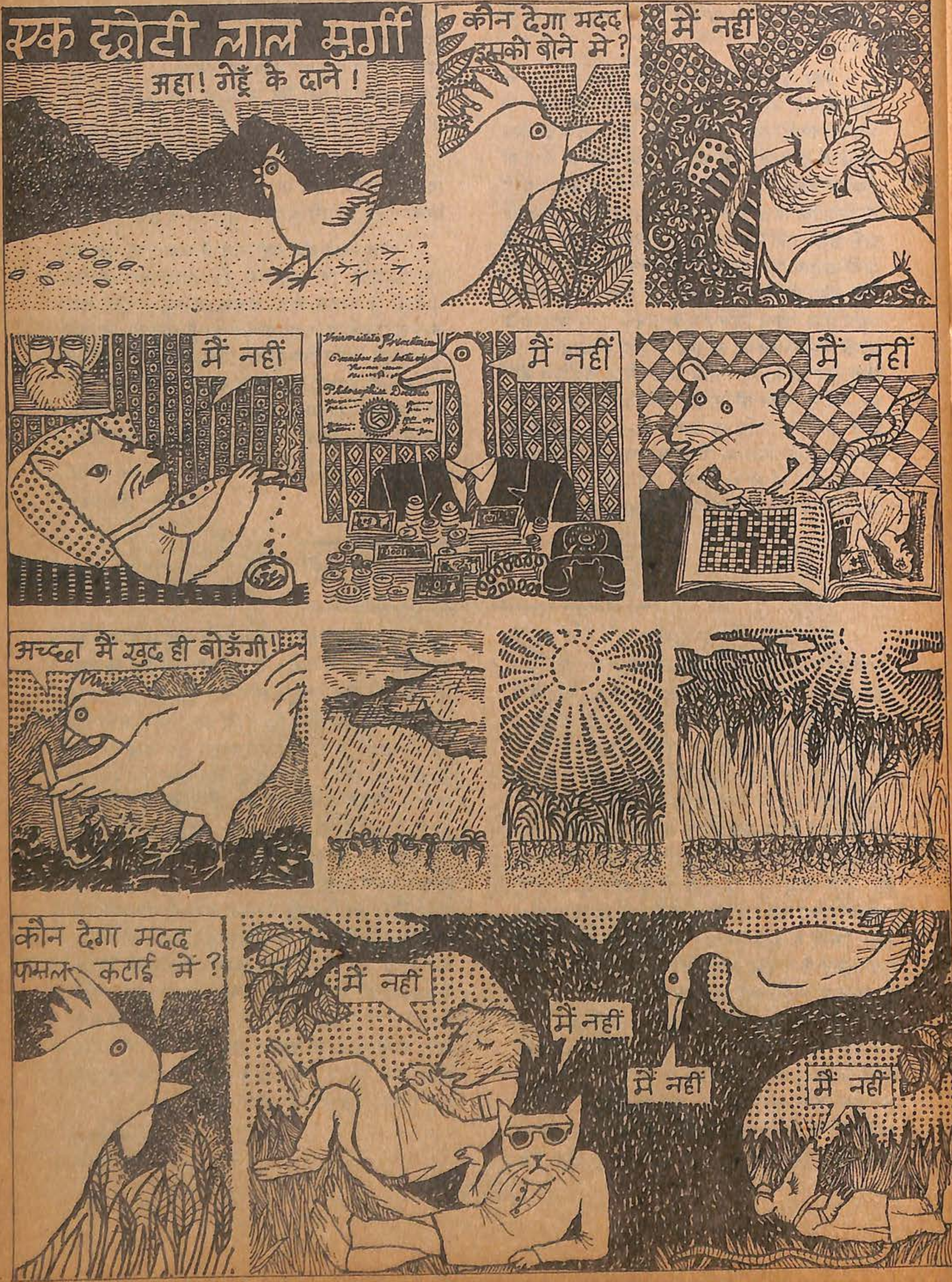
परंतु तभी वह हंसी रोने में बदल गई, क्योंकि रेशमा दीदी तब तक दम तोड़ चुकी थीं। क्योंकि बेहोशी में कार्बन-डाई-आक्साईड मुंह में बार-बार जाने से उनकी मृत्यु हो गई। पिताजी और मैं उस साधू के घर गए और नसीम पुलिस स्टेशन। जब हम साधू के घर खड़े ही थे तभी पुलिस आ गई। उन्होंने ढोंगी साधू को गिरफ्तार किया।मैं अपने घर उदासी से आ गया। इसलिए किसी साधू पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

□ सुमित खन्ना, आठवीं
सोहागपुर, होशंगाबाद

क्या तुम्हारे गांव में कोई ढोंगी साधु आया है?
उसकी पूरी कहानी लिखो।

एक दिन हमारे इधर ढोंगी साधू आए तो उन्होंने कापी में लिख दिया कि हम मौनी साधू हैं, हमसे ज्यादा बात मत पूछो। तो वे ऐसे साधू थे जो कि रात भर बोलते थे और दिन भर मौनी रहते थे। एक दिन एक आदमी ने कहा, साधू महाराज इस कठर की सब्जी कैसे बनाओगे तो उसने सहन (इशारा) से बता दिया तो वह आदमी समझ नहीं पाया तो ढोंगी साधु ने बोलकर कहा, कठर के छीलकर सब्जी बनाएंगे तो आदमी ने हंस दिया और ढोंगी साधू से बोला कि तुम साधू नहीं हो तुम तो पाखंडी हो। ढोंगी साधू चुप रह गया तो आदमी बोला, साधू अब बोल क्यों नहीं रहे। साधू बोला, तू दुआ मुझसे ले ले मगर किसी से कुछ कहना नहीं।तो आदमी बोला कि दुआ मुझसे ले ले क्यों मनुष्यों को बता रहा है कि मैं साधू हूं। तू साधू नहीं तू पाखंडी है। साधू गुस्सा होकर बोला, तुझे भस्म कर दूंगा। तो आदमी बोला कि मैं तुझे भस्म कर दूंगा। तो गांव वाले लोग और लुगाहियें और बाल बच्चे भी आए और ढोंगी साधू बोला कि मैं तुम्हें भस्म कर दूंगा अगर बात की तो। तो एक लड़का बोला तू भस्म करेगा तो मैं तुझे कुल्हाडी से काट दूंगा। ढोंगी साधू बोला कि अब मैं भस्म कर रहा हूं और धूल उठाकर बैठ गया तो सब लोग बोले, नहीं माहराज नहीं महाराज ऐसा मत करो। तो एक लड़का बोला कि साधू की ऐसी की तैंसी।साधू ने और धलू उठा ली और बोला देख। तो लड़का बोला कि तू भी देख। और लाठी उठा ली तो ढोंगी साधू ने उसकी तरफ धूल फेंक दी। तो लड़के ने समझा कि भस्म कर दिया।उसने भी साधू के सिर में लाठी मार दी। तो ढोंगी साधू ने आग जला ली और बोला अब तो भस्म नहीं किया, अब भस्म कर दूंगा तुम सबको। तो सब बोले कि कर दे। ढोंगी साधू ने आग हाथ में ले ली और एक बुड्ढे की तरफ दौड़ा और उसकी डाढ़ी में आग लगा दी तो बुड्ढे की आग आदमी ने बुझा ली। और ढोंगी साधू को पीटा। और उसके सिर में आग लगा दी तो उसकी बुझा दी और बांध दिया ओर सब बोले कि इसको दस दिन बंधा रहने दो। तो ढोंगी साधु रोने लगे तो बुड्ढे ने भी अच्छे चांटें मारे। ढोंगी साधू का उफान उतार गया और तीन दिन भूखा रहने दिया। फिर ढोंगी साधू को मार-पीटकर भगा दिया। ऐसे होते हैं ढोंगी साधू।

□ बालाराम आठवीं
उमरधा, होशंगाबाद


एक छोटी लाल मुर्गी
अहा! गेहूँ के दाने!
कौन देगा मदद इसको बोने में?
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं
अच्छा मैं खुद ही बोऊँगी!
कौन देगा मदद फसल कटाई में?
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं
मैं नहीं



चित्र: केरन एवं लाल्टू

(शेष पृष्ठ 8 से)

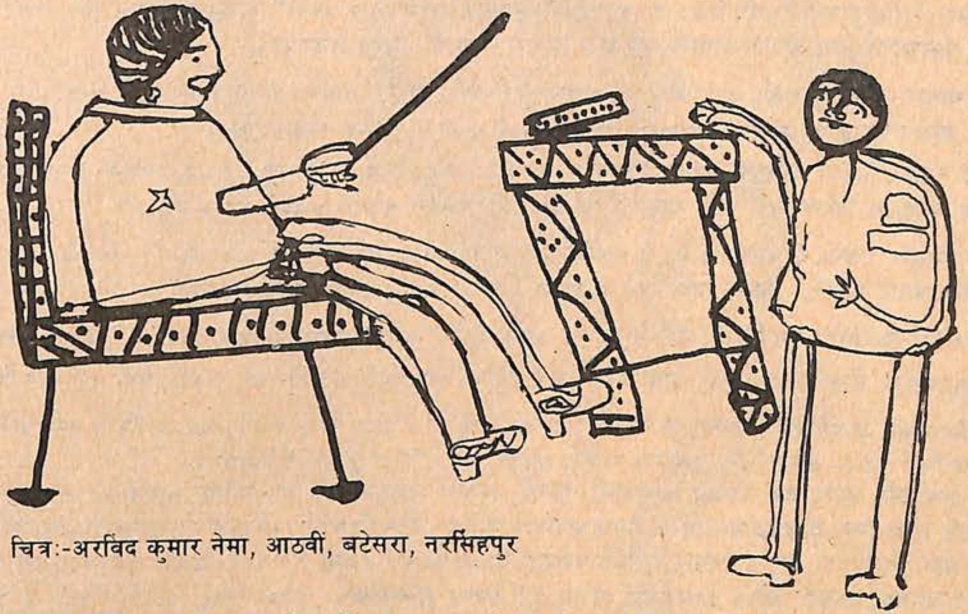
कर्मा, आठवीं, नामनपुर, लक्ष्मणसिंह, छापरी। शांतिलाल, सातवीं, मातमोर। कैलाशचंद आठवीं, विनोद भूतड़ा, लखनलाल सोलंकी, आठवीं, संजीव चावड़ा, अजय उपाध्याय, दसवीं, कन्नौद। सुनील पटेल, छोटेलाल, कैलाश सुमराखेड़ी। धर्मेन्द्र सिंह तोमर, नवमीं, बरखेड़ा सोमा। नरेंद्र ठाकुर, मोहन गोयल, कमल किशोर, आठवीं, भमोरी। गणेश, वत्सल श्रीवास्तव, राजेश वर्मा, कैलाश माली, आठवीं, खातेगांव। मुकेश वर्मा, आठवीं, गणेश चंद्र दुबे, सातवीं, राधेश्याम राठौर, आठवीं, रामदयाल श्रीवास्तव, सातवीं, खरेली। एहमद नूर खां, सातवीं, उमराव सिंह, रवींद्र व्यास, मानकुंड। अंशु पंचोली, छठवीं, सागरमल चौहान, नवमीं, बागली। जगदीश वर्मा, दसवीं, ज्योति सक्सेना, कमलापुर। मूल चंद चौधरी, आगली। भूपेंद्र सिंह यादव, देवगढ़। ललित पाचोटिया, सातवीं, नेवरी। **सभी जिला देवास।**

सुरेंद्र सिंह विकी, सातवीं, भावना टोंके, आठवीं, नईमबाबू खां, साधना जैन, दसवीं, मनीष मालवीय, छठवीं, प्रियंका पागे, दूसरी, श्वेता पाराशर, छठवीं, विक्रम वर्मा, रोहित बादल, पांचवीं, अकलेश्वर, सातवीं, सुनीता गोड़, तीसरी, ज्योति शिंदे, चौथी, सुनीता चौहान, छठवीं, शैलेंद्र कुमार यादव, लक्ष्मी कुमारी, जमनालाल शर्मा, सातवीं, मनोज, आठवीं, रामचंद्र मालवीय, चित्रा परमार, आठवीं, श्वेता संत, सीमा गुप्ता, पांचवीं, मुकेश सोलंकी, आठवीं, सूरज सिंह, पांचवीं, भावना पांडे, सातवीं, जयराज सिंह, सातवीं, आशा छापरे, ग्यारहवीं, वंदना मालवीय, सातवीं, कमलसिंह यादव, सातवीं, रेखा, पांचवीं, सुरेंद्र सिंह, मनीष मालवीय, छठवीं, राजेश कुमार पाटीदार, सातवीं, लालचंद सिटाया, पांचवीं, रितुराज पांचाल, तीसरी, चंद्रकिरण मालवीय, सातवीं, मुकेश सोलंकी, संतोष एस. जगताप, पांचवीं, मोनिका शरदचंद्र कराड़पेठे, तीसरी, चंद्रशेखर सालुंखे, छठवीं, राकेश कुमार मालवीय, नवमीं, ज्योतिवाला चौहान, संज्योत एस. जगताप, राजश्री परिहार, छठवीं, संगीता बैस, संजय शर्मा, दसवीं, अनामिका शर्मा, आठवीं, नवीन महाजन, आठवीं, अनामिका चौधरी, सातवीं, अनीता महाजन, नवमीं, आशा सिकदार, आठवीं, चंद्रकांता तलरेजा, दसवीं, दुरैया तैयबअली काश्मीरी, आठवीं, रीटा वैलमा जॉन, आठवीं, कामिनी मालवीया, सातवीं, भावना चौहान, आठवीं, सुजाता शर्मा, छठवीं, अनिल, चौथी, सुप्रिया पवार, छठवीं, चंद्र प्रकाश जलोदिया, आठवीं, ज्योति राजानी, नवमीं, सुनील जगन्नाथ, सातवीं, रेखा चौधरी, पांचवीं, क्षितिज पाराशर, सातवीं, ज्योति चौहान, छठवीं, पंकज नाडकर, आठवीं, अविनाश शर्मा, आठवीं, संजय चौहान, दसवीं, हेमंत बरुआ छठवीं, मनीष मालवीय, छठवीं, कमल सिंह यादव, छठवीं, प्रेमचंद्र, नवनीत नामदेव, सातवीं, वंदना मालवीय, सुनीता चौहान, छठवीं, संजय तिवारी, आठवीं, चंद्र प्रभा सुर्ये, नवमीं, मुकेश कुटवीय्या, आठवीं, मनीष नाडकर, नवमीं, हरीश मुकुटराव, सातवीं, अशोक सिंह, सातवीं, उमेश शर्मा, सातवीं, जगत सिंह आयाम, आठवीं, आशा चौहान, भावेश बक्षी, छठवीं, वर्षा सूर्यवंशी, सातवीं, संगीता जैन, दसवीं, सपना रानी, नवमीं, रेखा कुशवाह, दसवीं, संतोष सिसोदिया, आठवीं, सीमा तलरेजा, आठवीं, मानुश्री दीक्षित, दसवीं, कंचन शर्मा, आठवीं, गीता ठाकुर, दसवीं, ज्योति शिंदे, पांचवीं, संगीता शर्मा, आठवीं, कोकिला ठाकुर, आठवीं, तसनीम, छठवीं, अंजू, आठवीं, सीमा झाला, आठवीं, रीना परमार, आठवीं, सुनीता सिलौदिया, आठवीं, फरीदा न्याज, नवमीं, निधि व्यास, आठवीं, भावना पांडे, आठवीं, नम्रता यादव, आठवीं, जसपाल कौर, आठवीं, लतापाल, दसवीं, माधवी शर्मा, आठवीं, कविता देशमुख, दसवीं, संध्या तेनगुनिया, आठवीं, दीपा, पांचवीं, प्रीति बाला, आठवीं, श्वेता पाठक, आठवीं, नीतिका सोनी, सातवीं, रीना जैन, ग्यारहवीं, रीना राजकपूर परमार, आठवीं, वर्षा सूर्यवंशी, सातवीं, कंचन कीर्तन, दसवीं, रमेश सोनी, छटवीं, कविता मालवीय, चौथी, दीपक रुनीजा, आठवीं, अंजली भटनागर, छठवीं, गीता चौहान, दसवीं, ज्योति गुप्ता, योग्यता स्वर्णकार, सातवीं, सीमा व्यास, दसवीं, सुनील कुमार वडनेरे, आठवीं, दीपक कुमार, रुनीजा, आठवीं, अकलेश धोंगड़े, सातवीं, फरीदा बी, नौंवी, प्रीतिबाला गुप्ता, आठवीं, संध्या परमार, छठवीं, समता परमार, सातवीं, संजय शर्मा, सातवीं, दीपक केशरी, आठवीं, सुनील कुमार जलोदिया, सातवीं, सुनीता जाटव, दसवीं, मीना साहू, दसवीं, अनुश्री भटनागर, नवमीं, हरीश मुकुटराव कंसे, सातवीं, शैलेंद्र वर्मा, सातवीं, शैलेंद्र यादव, नवमीं, रीतेश जैन, छटवीं, छाया निगम, दसवीं, आशीष शर्मा, सातवीं, गंगा खट्टर, ग्यारहवीं, रुकीना केमकर, सातवीं, **सभी देवास।**

अनिता ठाकुर, छठवीं, खलरी। अमर बहादुर, आठवीं, कटनी। आनंद चौरसिया, उमरियापान, **जिला जबलपुर।** अशोक सिंह, नवमीं, धर्मपुरी। अजय सिंह, सूरजपुर। शंभू प्रसाद गुप्ता, दसवीं, सीतापुर। राजेश पांडेय, नवमीं, रमाशंकर, उपाध्याय, हीरालाल गुप्ता, बरगीडीह **जिला सरगुजा।** सुजीत जैन, भौं। सुरेश, ग्यारहवीं, गोहद, **जिला भिण्ड।**

दीप्ति मंडलोई, धरगांव। चंद्रशेखर नेमा, महेश्वर साकेत मिश्रा, ध्रुवकुमार, ग्यारहवीं, झिरन्या। नीरज वाजपेयी, सातवीं, बलवाड़ा। राजेश सोनी, ऊन, **जिला खरगोन** विनीत सिंह दीक्षित, मुंआर। उमेश राजोरियो, बरेली। वैशाली, औबेदुल्लागंज, **जिला रायसेन।** पुरुषोत्तम मेघवाल, सातवीं, जावद। अर्जुन बैरागी, उम्मेदपुरा, **जिला मंदसौर।**

भारती शर्मा, आठवीं, बिर्रा। श्रवण साहू, कोसला पामगढ़। घनश्याम प्रसाद, आठवीं, समेरा। अनिल जायसवाल, आठवीं, मदनपुर करतला। विजय चंदेल, दुल्लापुर, राजकुमार शर्मा, पंडरिया। भोलाशंकर, आठवीं, परसखेत कोरबा। जितेंद्र साहू, रेगनमुड़ा। अजय पांडेय, छठवीं, चैतमा। दिनेश यादव, आठवीं, मुकेश स्वर्णकार, अनिश कटकवार, बालौदा। सुरेश पटेल, साल्हे। अमिताभ अवस्थी, आठवीं, चांपा। अरविंद कश्यप, शिवरीनारायण। रमेश राठौर, सपिया। प्रभादेवी, सातवीं, भैसमां। सुनील गुप्ता, आठवीं, काकनवाणी। रामबाबू गुप्ता, करगीरोड। धर्मेन्द्र साहू, दिलीप वाजपेयी, संजय तिवारी,



चित्र:-अरविंद कुमार नेमा, आठवीं, बटेसरा, नरसिंहपुर

बिलासपुर। शरतचंद्र, अमोदा, जांजगीर। कैलाश, सुखाराखेड़ी, सुधीर श्रीवास्तव, पत्थरगांव, **जिला बिलासपुर।**

झाडूलाल नागवंशी, आठवीं, चंद्रभान सिंह, दसवीं, अमरवाड़ा। यतेंद्र सिंह, मोरडोंगरी। संध्या जोशी, कपुर्दा। पुरुषोत्तम इंगले, बरारीपुरा, **जिला छिंदवाड़ा।** सुनीता जैन, ग्याहरवीं, राजेंद्र साहू, हिण्डोरिया, **जिला दमोह।**

राजेंद्र व्यास, आठवीं, महेंद्र सिंह कर्णधार, आठवीं, नवीन तिवारी, नवमीं, नामली। लोकेश मेहता, आलोट। निलेश सोनी भावुक, राजेंद्र सिंह, परिवेश सोनी, **जिला रतलाम।** मुकेश रघुवंशी, दसवीं, गोपाल सिंह किरार, **जिला गुना**

योगेंद्र पांडे, नवमीं, धरसींवा। इंद्रजीत राठौर, हरिशंकर, देवांगन। पद्मावती पारकर, दसवीं, राजिम। पुरंदरसिंह, बिलाईगढ़। नरेंद्र साहू, दसवीं, सरायपाली, चक्रधर ठाकुर, रवोना, **जिला रायपुर।** जयश्री मिश्रा, **बीना।**

लाल साहब वर्मा, सातवीं, भैयाजी, उपरारिया, हिमांशु दुबे, सातवीं, हरीश कुमार, सहावन। विनय शर्मा, नवमीं, राजेश सेन, चावरपाठा, **जिला नरसिंहपुर।** जावेद खान, पांचवीं, पचौर। रीना भावसार, पांचवीं, नरसिंहगढ़, **जिला राजगढ़।**

पंकज चौहान, नवमीं, खरसिया। सतीश कांत केशरी, महेश्वर साव, रायगढ़। संगीता शर्मा, पांचवीं, घरघोड़ा। मनीष प्रधान, ग्यारहवीं, कुनकुरी। **जिला रायगढ़।** शुभा तिवारी, लालगांव। समयलाल सोधिया, दसवीं, गंगेय, **जिला रीवा।**

विनय मौर्य, खाम्हीडोल। शेषनारायण राठौर, ग्यारहवीं, सामतपुर। जितेंद्र, आठवीं, उमरिया। राकेश बघेल, दसवीं, **जिला शहडोल।** शारदा त्रिपाठी, छठवीं, रहिकवारा। अंबरीश त्रिपाठी, बद्रीप्रसाद पाठक, ग्याहरवीं, सोनवारी, **जिला सतना।**

अनिल चौहान, खेड़ा खजूरिया। ब्रजेश गहलोत, आठवीं, महिदपुर। पद्मा जैन, आठवीं, अंजू गुप्ता, आठवीं, सुधा अजमेरा, आठवीं, प्रेरणा सोनी, कन्हैयालाल केथवाल, ग्यारहवीं, आगर। मिलिंद मकेश्वर, बड़नगर। विजेंद्र वर्मा, नितिन नामदेव, संजीव मालवीय, विष्णुकांत पांचाल, कृष्णभट्ट, खाचरोद, राकेश सोनी, बिरलाग्राम, नागदा, **जिला उज्जैन।**
एस.के. गुप्ता, सिरसा। सुभाषचंद्र श्रीवास्तव, ऊंचिया। आनंद श्रीवास्तव, नवमीं, दिनेश श्रीवास्तव, **जिला दतिया।**

नरेंद्र मोहिंद्रा, भितवार। अभिषेक गौतम। **जिला ग्वालियर।** फागुराम कोसरे, आठवीं, मानेज गुप्ता, कोंडागांव। तेजराम नेताम, आठवीं, खरथा। अभिमन्यु कुंवर, शामतरा। भुवनलाल साहू, छठवीं, कुडुरमाला। नारायण सिंह, मुढ़ीपार। हरिओम, दसवीं, राढौरा, भवानी शंकर, पटौद, **जिला बस्तर।** संतोष तिवारी, ढाढ़ा, **मण्डला।**

उमाशंकर, नवमीं, मोहम्मद फुरकान खान, पी. प्रकाश, आशुतोष शर्मा, पांचवीं, शिवेंद्र पांडिया, नवमीं, मोनिका पांडिया, सातवीं, अनिल श्रीवास्तव, सुरेश कुमार, निशांत मिश्रा, रेणुका पांडिया, मनीष शर्मा, **जिला भोपाल।**

दिनेश पाटीदार, आठवीं, कीद । धर्मेन्द्र सोनी, नवमीं, कुक्षी। रामसिंह परमार, आठवीं, तिरला। सीमा श्रीवास्तव, छठवीं, दुर्गा रावल, सातवीं, लोकेंद्र सिंह सोलंकी, राधेश्याम, आठवीं, **जिला धार।** बहादुर सिंह रावत, ओछापुर, **मुरैना।**

संजय लिटौरिया, सतीश शर्मा, हरपालपुर। चक्रेश जैन, आठवीं, विनोद जैन, आठवीं, भंगवा। जीवन शुक्ल, ग्यारहवीं,

रानीताल। गणेश शुक्ल, दसवीं, गंज। अतुल, दसवीं, नौगांव। सत्येंद्र मिश्र, आठवीं, गोरखपुर, नम्रता पांडे, रत्नेश पांडे, तीसरी, छतरपुर। उमा कुमारी तिवारी, जगदीश तिवारी, लुगासी, **जिला छतरपुर।**

अनिल सोगारे, दसवीं, हिडली। काशमीर सिंह, पाथाखेड़ा। सतीश चौधरी, घनौरा। शशांक शेखर, छठवीं, शाहपुर, **जिला बैतूल।** अर्चना भारद्वाज, आलोक भारद्वाज, कवर्धा, रविनेश सोनी, **जिला राजनांदगांव।**

आलोक राठौर, दिनेश कौशल, भरौदा, भिलाईनगर। मोतीलाल यादव, लाटाबोड़। जोगेंद्र देवागंन, अजुंदा। अशोक राजपूत, कोहका। दिग्विजय अंगारे, नवमीं, निपानी। समीर ठाकुर, नवमीं, अजुंदा। **जिला दुर्ग।**

राहुल नागराले, नवमीं, शुजालपुर। मुरली दास बैरागी, सातवीं. भरड़ा प्रशांत वैश्य, शुजालपुर। दिलीप जैन, शाजापुर। मानसिंग, आगर मालवा। **जिला शाजापुर।** कुलदीपा राठौर, आठवीं, बांकी, **जिला सिवनी।**

संध्या शर्मा, ग्यारहवीं, सुमन वर्मा, सातवीं, मनोज शर्मा, नवीन मुद्गल, **जिला इंदौर**श्रीश कुमार, ग्यारहवीं, **विदिशा।**

कमलेश बागुल, संजय जैन, दसवीं, भाबारा। दयाराम गोयल, ग्यारहवीं, अंजू नामदेव, छठवीं, मेघनगर, **झाबुआ।**

रत्ना खैरलांजी, वारासिवनी। भक्तराज बारेकर, दसवीं, डुधारा। प्रमोद गौतम, नवमीं, कटंगी, **जिला बालाघाट।**
महिपाल सिंह बुंदेला, दसवीं, देरी जखीरा। राजेश नापित, अतुल मिश्र, **जिला टीकमगढ़।**
कांता आसवानी, प्रदीप दुबे, विजय आसवानी, छठवीं, सुनील सोमवंशी, दसवीं, मनीषा सोमवंशी, सातवीं, सुशील सोमवंशी, सोहागपुर। दीनबंधु मालवीया, दीपक पाराशर, योगेश गौतम, टिमरनी। नरेंद्र निषाद, खापरखेड़ा। राजेंद्र सराठे, राजेश सोनी, पिपरिया। अनुजा परसाई, अर्पिता परसाई, मन्जा परसाई, नवमीं, तवानगर। अर्चना राजपूत, सेमरी हरचंद। इरशाद अहमद, हरसूद। अमित कोसरवाल, संजय दुबे, **जिला होशंगाबाद।** ब्रजेश गुर्जर, छठवीं, पुनासा, **प. निमाड़।**
नंदिनी अरोड़ा, वसुदा अरोड़ा, फतेहपुरी, **दिल्ली** प्रभाशंकर, सातवीं, ब्रजनगर, **जिला संबलपुर (उड़ीसा)**
संजय सैनी, चौथी, **वर्धा (महाराष्ट्र)** मदन लाल देवता, रामपुर कोलिसरी।

दिसंबर अंक में हमने 'खेल खेल में' पुस्तिका के बारे में जानकारी प्रकाशित की थी। 1 जनवरी, 1987 से डाक की दर बढ़ गई हैं। इसलिए खेल खेल में पुस्तिका बुलवाने के लिए अब निम्नानुसार मूल्य की डाक टिकट या राशि भेजें –

प्रतियां	सहयोग राशि	डाक खर्च
1	1.00 रुपए	1.00 रुपए
2	2.00 "	2.50 "
3	3.00 "	4.00 "
4	4.00 "	5.50 "
5	5.00 "	7.00 "
10	10.00 "	14.00 "
15	15.00 "	21.00 "
20	20.00 "	28.00 "

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के संबंध में विवरण:

प्रकाशन का स्थान: भोपाल
प्रकाशन की अवधि: मासिक
प्रकाशक का नाम: विनोद रायना
राष्ट्रीयता: भारतीय
पता: एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016
मुद्रक का नाम: विनोद रायना
राष्ट्रीयता: भारतीय
पता: एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016

संपादक का नाम: विनोद रायना
राष्ट्रीयता: भारतीय
पता: एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है : एकलव्य ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016

मैं विनोद रायना, यह घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जनवरी, 1987

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)





चित्र:-संजीव कुमार चावड़ा, नवमी
कन्नौद, देवास

एकलव्य के लिए विनोद रायना द्वारा प्रकाशित एवं भंडारी आफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित

पंजीयन क्रमांक 1317/सी/85
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/87



चित्र:-राकेश मालवीय, राधागंज, देवास